श्री बाहुबली भगवान, श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

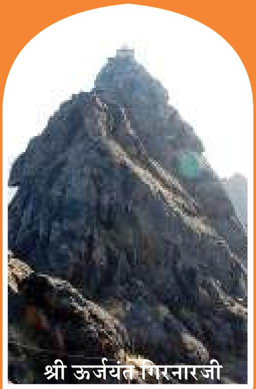
श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 14	अंक : 8	मुम्बई, नवम्बर 2024	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 14	ISSUE : 8	MUMBAI, NOVEMBER 2024	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2551

तीर्थंकर श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान, खराड़ी-पुणे, महाराष्ट्र

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 14 अंक 8 नवम्बर 2024

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2550

इस अंक में

विश्व शांति केलियेभगवान महावीर का अहिंसा संदेश आज भी प्रासंगिक 7

श्रमण धर्म ही सनातन धर्म है 8

अपराजेय दिगंबर जैनाचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज 10

नेमिनाथ की निर्वाण-भूमि गिरनार पर्वत की पाचवीं और अन्य तीनों टोंकेतथ्य 12

नई कमेटी (म.प्र.), को प्रथम आशीर्वाद देश केसर्वोच्च आचार्यश्री परमपूजनीय समयसागर जी महाराज ... 19

महाराष्ट्र अंचल कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह संपन्न 21

अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी द्वारा तीर्थरक्षार्थ 2024 में मन्दिरों में रखी गई गुल्लकों का विवरण 27

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

हर तीर्थ विकसित हो, हर यात्री संतुष्ट हो

शरद ऋतु अपने यौवन पर है। ग्रीष्म की तपिश, वर्षा की बौछारें एवं तांडव भी समाप्त हो चुका है। शीत की कुनकुनी धूप जल्द ही आपको खुले आसमाान के नीचे बुलायेगी। यह मौसम ही शारीरिक अनुकूलता के दृष्टि से तीर्थ यात्राओं हेतु सबसे उत्तम रहता है न ज्यादा गर्मी और न ज्यादा सर्दी।

तीर्थों पर जाकर ही बहुत से परिवारों को वातानुकूलित कक्षों से बाहर आकर प्रकृति का आनन्द उठाने का मौका मिलता है। निम्न एवं मध्यमवर्गीय परिवार भी कंक्रीट के जंगलों एवं घनी बस्तियों की एकरस जिन्दगी से बाहर निकल कर कुछ दिन के लिए सुकून का अनुभव करते हैं। हमारे बचपन की यादों एवं वरिष्ठ जनों के संस्मरण यह बताते हैं कि अब तीर्थ यात्राओं का स्वरूप पूर्णतः बदल चुका है। आजादी के पहले तीर्थो का स्वरूप कुछ भिन्न था प्रायः छोटे छोटे किन्तु अतिशय युक्त, श्रद्धा के केन्द्र जिन मन्दिर होते थे, हाँ! कुछ मन्दिर जैसे श्री महावीर जी, चमत्कार जी (सवाईमाधोपुर-राजस्थान), लाल मन्दिर जी (दिल्ली), श्री सम्मेदशिखरजी, श्री गिरनार जी, श्री मुक्तागिरी जी, श्री मांगीतुंगी जी आदि-आदि विशाल कलात्मक एवं भव्य होते थे। यातायात के साधन सीमित थे। फलतः हमें बस या धीमी गति से चलने वाली ट्रेनों के द्वारा करना पड़ता था। उस समय ट्रेनों में पूर्व आरक्षण की प्रक्रिया नहीं होती थी। क्षेत्रों पर भी जो कमरे थे वे सीमित थे किन्तु किसी एक कमरे में मिलने-जुलने वाले एवं रिश्तेदार सभी का सामान रखकर बरामदे या जहाँ भी जगह मिल जाये निश्चिन्त होकर सोते थे। प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर भक्ति भाव से पूजन, अभिषेक, स्वाध्याय करते थे यदि क्षेत्र पर कोई संत विराजमान हैं तो उन्हें आहार देने और कराने का शुभ अवसर प्राप्त होता था एवं इसके पश्चात स्वयं भोजनादि से निवृत्त होकर दिनचर्या प्रारम्भ करते थे। ज्यादा कमरों या वातानुकूलित कमरों की कोई जरूरत नहीं होती थी। परिवार एवं इष्टबन्धुओं सहित यात्रा करने वाले अधिकतर अपना शुद्ध भोजन स्वयं बनाते थे, क्योंकि अधिकांश का बाजार का या होटल के भोजन का त्याग रहता था। वे शुद्ध भोजन करते थे। किन्तु अब तीर्थ यात्राओं का स्वरूप पूर्णतः बदल गया है आज का युवा उसी तीर्थ पर जाना पसन्द करता है जहाँ :-

1. स्वच्छ, वातानुकूलित, सुविधापूर्ण आवास
2. स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन
3. सुरम्य प्राकृतिक वातावरण

उपलब्ध हो। ट्रेनों/बसों में तो आरक्षण रहता ही है, आज के युवा क्षेत्र पर भी आवास की एडवान्स बुकिंग करना चाहते हैं जिससे वहाँ पहुँचने पर कोई अनिश्चितता न रहे। आज के युवा स्वतंत्र सुविधायुक्त वातानुकूलित कक्ष चाहते हैं, फलतः तीर्थक्षेत्र के प्रबन्धकों को अधिकाधिक तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करने हेतु

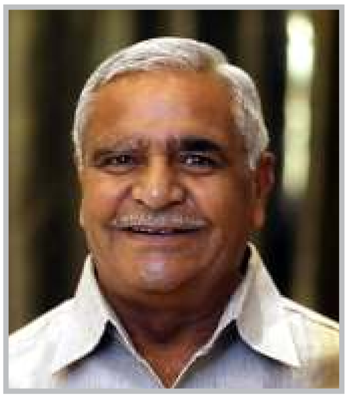

1. अधिकाधिक सुविधायुक्त वातानुकूलित फ्लेट का निर्माण
2. भोजनशाला/जलपान गृह का निर्माण करना चाहिए। आवास की आनलाइन बुकिंग की सुविधा वैसे ही जरूरी है जैसे दान देने हेतु QR Code की सुविधा।
3. यदि आवास व्यवस्था बहुमंजिला है तो लिफ्ट भी जरूरी है क्योंकि 50-55 वर्ष से अधिक उम्र के अधिकांश बुजुर्गों को घुटनों में दर्द की शिकायत रहती है। हार्ट सर्जरी आदि से गुजर चुके व्यक्तियों को भी लिफ्ट की जरूरत रहती है।

चाहे बहुमंजिला इमारतों में बने कार्यालय हो या मल्टी स्टोरी के फ्लेट, इन सब जगहों पर गमलों में ही हरियाली है। फलतः जब लम्बे-चौड़े घास के मैदान मिलते हैं या फूलों की क्यारियाँ, तो मन प्रमुदित हो जाता है, अतः क्षेत्र का मास्टर प्लान इस प्रकार बनाना चाहिए कि खुली जगह ज्यादा से ज्यादा मिले, जहाँ कुछ समय सुबह-शाम बैठकर यात्री प्रकृति से नाता जोड़ सके। मैं तीर्थों को पर्यटनस्थल बिल्कुल नहीं बनाना चाहता किन्तु वर्तमान में युवावर्ग की जो जीवनशैली है, उनकी जो न्यूनतम आवश्यकतायें है उसकी पूर्ति तो करनी ही होगी। यदि हम न्यूनतम आवश्यकतायें नहीं जुटायेंगे तो युवा तीर्थों पर कम आयेंगे। एक बार उन्हें बुलायें तो उनकी श्रद्धा बनेगी, बार-बार आयेंगे फिर वे विकास में सहभागी भी बनेंगे।

भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा विभिन्न तीर्थों का व्यापक एवं समग्र सर्वेक्षण अंचलवार कराया जा रहा है। एतदर्थ कमेटी के प्रतिनिधि आंचलिक नेतृत्व के साथ आपके पास पहुँचेंगे तब आप उनसे अपनी सम्पूर्ण योजना पर चर्चा करें। क्षेत्रों के विकास हेतु मास्टर प्लान तैयार करने में भा.दि. जैन तीर्थ कमेटी तकनीकी सहयोग देने हेतु प्रस्तुत है। एतदर्थ प्रथम चरण में यदि आपका क्षेत्र भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध न हो तो आचंलिक अध्यक्ष/महामंत्री से सम्पर्क कर सम्बद्धता लेवें अथवा आप मेरे कार्यालय से भी सम्पर्क कर सकते है हमारा ध्येय वाक्य है।

हर तीर्थ विकसित हो, हर यात्री संतुष्ट हो।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं भगनियों,
सादर जय-जिनेन्द्र

हम सभी ने भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव बड़े ही धूम-धाम और भक्तिभाव से मनाया है। भगवान महावीर के निर्वाण को २५५१ वर्ष पूर्ण हो गये हैं फिर भी हमें उनकी वाणी, विचारों और सिधान्तों का साक्षात्कार हो रहा है और हम महावीर की राह पर निरन्तर बढ़ भी रहे हैं। वृषभादि चौबीस तीर्थंकरों द्वारा प्रवर्तित शास्वत जैन धर्म को आज हम सभी जान पा रहे हैं और सरलता से प्राप्त कर पा रहे हैं तो इसमें निश्चित ही हमारे असीम पुण्य का उदय है और हम इस पूण्य को सार्थक बनाकर शास्वत सिद्धदशा की ओर बढ़ते रहे जिससे हमारा यह भव सफल हो सके।

वर्तमान में हमारे पूर्वजों द्वारा सौंपी गयी अमूल्य धरोहरों का संरक्षण एवं संवर्धन में कार्यरत अपनी एकमेव संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी जो आज एक विशाल बटवृक्ष की भांति सम्पूर्ण देश के दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण के लिए तत्पर है। अत्यंत हर्ष हो रहा है कि यह संस्था अपने १२५ वें स्थापना वर्ष में प्रारम्भ कर रही है। जिसके लिए हम सभी शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष मनाने जा रहे हैं जो कि २२ अक्टूबर २०२६ से २२ अक्टूबर २०२७ तक मनाया जायेगा जिसके लिए शास्वत तीर्थ अयोध्या से प्रारम्भ कर शास्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी में संपन्न करने की योजना है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के १२५ वें स्थापना के अवसर पर आप सभी को सम्मलित होकर हर्ष व्यक्त करने के लिए आमंत्रण कर रहा हूँ।

हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को और अधिक सुदृढ़ करने के उद्देश्य से गोलक योजना के माध्यम से जगह-जगह गोलखें रखवाई जा रही हैं जिसके लिए हम सभी उन सभी तीर्थों, मंदिरों के पदाधिकारियों एवं ट्रस्टियों के प्रति अपना धन्यवाद ज्ञापित करते हैं साथ ही अन्य सभी जहाँ जहाँ गोलखें नहीं रखी गयी हैं वहां के तीर्थों, मंदिरों के पदाधिकारियों एवं ट्रस्टियों से अपील करते हैं कि आप भी तीर्थक्षेत्र कमेटी की इस गोलक योजना में सहयोग करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी को संबल प्रदान करें। चूंकि श्री सम्मेदशिखर जी, श्री शिरपुर केस सुप्रीम कोर्ट में अपनी अंतिम सुनवाई के लिए लंबित है जिसके लिए हमें सम्पूर्णता के साथ अपने तीर्थों के संरक्षण के लिए सामना करना है, चूंकि कोर्ट केसों में अत्यधिक धन-खर्च होता है जिसके लिए हम समाज से सहयोग की अपील करते हैं।

भगवान महावीर के निर्वाण दिवस से प्रारम्भ हुआ वीर निर्वाण संवत नूतन वर्ष की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

स्तुत्य निर्णय/अनुकरणीय पहल

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति आस्थावान दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों का अतीत अत्यन्त समृद्ध है। शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या, शाश्वत निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर, अनेक सिद्धक्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र एवं कला क्षेत्रों की एक श्रंखला हमें सौभाग्य से प्राप्त है। इन देव स्थानों की सपरिवार यात्रा कर प्रत्येक जैन श्रावक स्वयं को कृतकृत्य अनुभव करता है। इन क्षेत्रों एवं विभिन्न नगरों के मंदिरों में विराजित जिन बिम्बों के दर्शन करना निश्चय ही असीम पुण्य बंध का कारण है। किन्तु हमारी समाज की उदासीनता के कारण आज देश के जैन मन्दिरों की सूची तक भी उपलब्ध नहीं है। 15 वर्ष पूर्व दि. जैन मन्दिर निर्देशिका के माध्यम से एक प्रयास अवश्य हुआ था किन्तु बाद में सतत संशोधन/परिवर्द्धन न होने के कारण वह आज प्रासंगिक नहीं रह गई। एक बार पुनः सधन, सुव्यवस्थित प्रयास जरूरी हैं। सोश्यल मीडिया का सार्थक उपयोग कर आज मन्दिरों की सूची का निर्माण अपेक्षाकृत सरल है किन्तु एतदर्थ प्रतिबद्धता एवं योजनाबद्ध क्रियान्वयन जरूरी है।

शास्त्रों का संरक्षण, अनुवाद एवं प्रकाशन एक जटिल प्रयास है। भारत सरकार द्वारा प्राकृत को शास्त्रीय भाषा घोषित करने से इस कार्य में गति आयेगी।

गुरुओं के प्रति समाज की श्रद्धा बहुत है। यह बात अलग है वह सबके प्रति समान नहीं है। तथापि अपने अपने आस्था के केन्द्र गुरुओं के प्रति समर्पण एवं उनकी प्रेरणानुसार धार्मिक/सामाजिक कार्यों में आर्थिक सहयोग कर श्रावक आत्मसंतुष्टि का अनुभव करते हैं।

15 नवम्बर सराकोद्धारक राष्ट्रसंत आचार्य श्री ज्ञानसागर जी का समाधि दिवस है। राजस्थान के बांरा में 15.11.2020 को उनकी अचानक मात्र 63 वर्ष की वय में समाधि हो गई थी। आप प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर (छाणी) परम्परा के षष्ठ पट्टाचार्य थे। इस परम्परा के पूर्ववर्ती आचार्य श्री सूर्यसागर जी, आचार्य श्री विजयसागर जी, आचार्य श्री विमलसागर जी (भिण्ड), आचार्य श्री सुमतिसागर जी एवं आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर जी हुए है।

आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज ने मुरैना के श्री उमेश जैन को महावीर जयन्ती (31.03.88) को मुनि दीक्षा प्रदान कर मुनि ज्ञानसागर संज्ञा प्रदान की थी एवं मात्र 10 माह बाद 30.01.89 को उपाध्याय पद पर प्रतिष्ठित किया। आपकी समाधि के उपरान्त आपके द्वारा दीक्षित एक मात्र **मुनि श्री ज्ञेयसागर जी महाराज** को परम्परा के पट्टाचार्य (सप्तम) पद पर प्रतिष्ठित किया गया।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की प्रेरणा से समाज एवं साहित्य सेवा की अनेक प्रवृत्तियाँ पूरे देश में संचालित हुई हैं किन्तु उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैंः-

(1) इंजीनियर्स सम्मेलन
(2) डॉक्टर्स सम्मेलन
(3) अभिभावक सम्मेलन
(4) प्रशासनिक/पुलिस अधिकारियों का सम्मेलन
(5) पत्रकार सम्मेलन
(6) कर्मचारी/अधिकारी सम्मेलन
(7) जैन विधायकों/सांसदों का सम्मेलन
(8) वैज्ञानिक सम्मेलन
(9) सी.ए. कॉन्फ्रेन्स
(10) बैंकर्स कॉन्फ्रेन्स
(11) न्यायाधीश सम्मेलन
(12) सराक सम्मेलन
(13) वार्षिक जैन प्रतिभा सम्मान समारोह
(14) जैन कॅरियर काउन्सलिंग
(15) ग्रन्थ प्रकाशन
(16) श्रुत संवर्द्धन पुरस्कार
(17) राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ
(18) विद्वत् शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर
(19) जेलों में प्रवचन
(20) शाकाहार सम्मेलन
(21) शाकाहार चित्रकला एवं भाषण प्रतियोगिताएँ आदि।

इनका संचालन श्रुत संवर्द्धन संस्थान-मेरठ, प्राच्य श्रमण

भारती-मुजफ्फरनगर, आचार्य शांतिसागर छाणी ग्रन्थमाला-बुढ़ाना, संस्कृति संरक्षण संस्थान-दिल्ली, सोसायटी फॉर वेलफेयर एण्ड डेवलपमेन्ट ऑफ सराक-मेरठ, ज्ञानसागर साइंस फाउण्डेशन-नई दिल्ली, डॉक्टर्स फोरम, एडवोकेट फोरम, उजाला, प्रतिभा सम्मान समारोह समिति, सराक ट्रस्ट-दिल्ली आदि अनेक संस्थाओं द्वारा किया जाता है। प्रतिभा सम्मान का कार्य आर्यिका श्री आर्षमती माताजी की प्रेरणा से नियमित रूप से चल रहा है।

अनेकों मंदिरों के निर्माण, पूजा, विधान आदि के अतिरिक्त आपने 01 मुनि, 03 आर्यिकाओं, 03 क्षुल्लकों एवं 07 क्षुल्लिकाओं को दीक्षा भी प्रदान की है, इनका पूर्ण विवरण **आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज छाणी परम्परा: परिचय एवं उपलब्धियाँ** शीर्षक मेरी पुस्तक में प्रकाशित है।

पूजापद्धति, विचारधारा एवं परम्परा के नाम पर बट रही समाज को जोड़ने का भागीरथ उपक्रम करने वाले संत थे आचार्य श्री ज्ञानसागरजी। तीन दशक पहले जब वे विहार के प्रवास पर थे तब आपने परिस्थितिवश जैन समाज की मुख्यधारा से अलग हुए अपने सराक बन्धुओं पर अपना वात्सल्य लुटाया। उनको समाज एवं परम्पराओं से जोड़ा। उनके विकास की योजनाएँ बनाई एवं सराकोद्धारक कहलाए। आपने नयनार एवं रंगिया जाति के जैन बन्धुओं का भी उद्धार किया।

आप युवा पीढ़ी के एक बड़े भाग तथा पेशेवर जिन्दगी से जुड़े डॉक्टर्स, इंजीनियर, सी.ए., जजेस, एडवोकेट्स, बैंकर्स, प्रशासनिक अधिकारियों को अपने पास स्नेहपूर्वक बुलाकर उन्हें कर्तव्य का बोध कराते थे। युवाओं को मोबाइल, लेपटाप एवं फेसबुक के असीमित उपयोग एवं व्यसनी बनने से बचने की प्रेरणा देते थे तो विभिन्न सम्मेलनों के माध्यम से उनको उनके सामाजिक दायित्व का अहसास भी कराते थे। समाज से कोई सरोकार न रखने वाले पेशेवर भी पूज्य श्री से जुड़कर समाज के काम में रुचि लेने लगते थे ऐसा मैंने स्वयं देखा है। उनकी नीति रही 'सबसे मिलो, सबको गले लगाओं, उनको प्रेरणा दो, साहित्य दो यदि कुछ प्रतिशत भी सुधरे, समाज से जुड़े, तो अपना उद्देश्य सफल हो जायेगा।'

पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के भक्तों ने गुरुवर के दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्रवणबेलगोल के 2009 चातुर्मास (वर्षायोग) की स्मृति स्वरूप सर्वसुविधायुक्त 2 मंजिला भव्य यात्री निवास '**आचार्य ज्ञानसागर निलय**' श्री दि. जैन मठ एवं स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति स्वामी जी के मार्गदर्शन में बनवाने का निर्णय लिया है। इससे गुरुवर ज्ञानसागर जी का नाम तो अमर होगा ही क्षेत्र पर आने वाले यात्रिओं को भी सुविधा रहेगी। ज्ञानसागर जी के भक्तों का यह निर्णय स्तुत्य एवं अनुकरणीय है। हम आशा करते है कि अन्य संतों के भक्तों द्वारा भी इसी प्रकार से तीर्थ विकास में सक्रिय सहभागिता दी जायेगी इससे हमारे गुरुओं का नाम तो अमर होगा ही तीर्थ विकास के कार्य को भी गति मिलेगी। श्रवणबेलगोल दि. जैन परम्परा का अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त केन्द्र है। यहाँ सतत देशी-विदेशी पर्यटक एवं भक्तगण आकर भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली को नमन करते हैं। भगवान

प्रस्तावित आ. ज्ञानसागर निलय का एक चित्र

गोम्मटेश्वर बाहुबली एवं पूज्य आचार्य श्री के भक्तों का यह निर्णय और भी अनुमोदनीय है कि उन्होंने अर्थव्यवस्था की जिम्मेदारी तो ली है किन्तु निर्माण, संचालन एवं प्रबन्धन सब मठ को सौंप दिया है। 21 नवम्बर 2024 प्रातः 9.30 के शुभमुहूर्त में देशभर के गुरुभक्तों की उपस्थिति में इसका शिलान्यास पूज्य स्वामी जी के पावन सान्निध्य में होगा।

पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने जहाजपुर (भीलवाड़ा) के ऐतिहासिक पंचकल्याणक के अवसर पर आचार्य विद्याभूषण सन्मतिसागर से दीक्षित परम्परा की वरिष्ठ आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी को गणिनी पद पर प्रतिष्ठित किया था। उन्हीं गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी ने आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से संचालित होने वाली एवं वर्तमान में संरक्षण के अभाव में अवरूद्ध सभी प्रवृत्तियों को पुनः शुरु करने की प्रेरणा दी है एतदर्थ उन सब प्रवृत्तियों के संयोजकों/संचालकों की एक बैठक को स्वस्तिधाम जहाजपुर में आयोजित की जा रही है सभी सम्मेलनों के संयोजकों, फोरमों के प्रमुखों को इस बैठक में आहूत कर पुनः दूनी उर्जा के साथ तत्परता से वर्ष 2025 से ही सब गतिविधियाँ शुरू करने की प्रेरणा दी गई है। पूज्य माताजी का यह निर्णय भी स्तुत्य है। इससे समाज का बड़ा वर्ग जो सामाजिक गतिविधियों से जुड़ रहा था पुनः सक्रिय हो जायेगा एवं गुरुवर की कल्पना साकार हो उठेगी।। ज्ञातव्य है कि भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वस्तिधाम तीर्थ पर सभी आधारभूत सुविधायें, आवास, भोजन, सभागार, कुशल प्रबन्ध तंत्र उपलब्ध है।

विभिन्न प्रोफेशनल समूहों के स्वस्तिधाम नियमित पधारने से क्षेत्र का प्रचार-प्रसार तो होगा ही, भगवान मुनिसुव्रतनाथ के अभिषेक, पूजन से दिगम्बर जैन भाईयों को असीम पुण्य बन्ध होगा साथ ही उन फोरमो के कार्यो को भी गति मिलेगी, नवचेतना का संचार होगा। तीर्थ विकास होगा एवं समाज का विकास होगा।

आइये हम सब मिलकर इन कार्यों की अनुमोदना करें तथा श्रवणबेलगोल (21.11.24) पधारे।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

विश्व शांति के लिये भगवान महावीर का अहिंसा संदेश आज भी प्रासंगिक

विजय कुमार जैन, राघौगढ (म.प्र.)

अहिंसा के अवतार युगदृष्टा भगवान महावीर का 2551 वाँ निर्वाणोत्सव हमने 01 नवम्बर 24 को 2मनाया। भगवान महावीर एक युग पुरुष, युग दृष्टा, एक महामानव थे। वे जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे। क्षत्रिय राज कुमार होने के बावजूद भी उन्होंने कभी विश्व विजय का सपना नहीं देखा। जिस समय भगवान महावीर का अवतरण हुआ, दुनिया में हिंसा और अत्याचार का बोल बाला था। महाबीर ने विषम परिस्थिति में सच्चा मार्ग दुनिया को दिखलाया। आपने प्राणीमात्र के सुख के लिये "जिओ और जीने दो" का अमूल्य मंत्र दिया। वर्तमान में भगवान महावीर के 2551 वे निर्वाणोत्सव के अवसर हम पीछे मुड़कर देखें तो पिछले तीन वर्ष पूर्व सारी दुनिया कोरोना से पीड़ित रही है। कहते हैं चीन में आम आदमी ने जहरीले जीव जन्तुओं को अपनी जिव्हा का स्वाद बढ़ाने उनका वेरहमी से भक्षण किया, यह भी आरोप है कि कोरोना महामारी का शुभारंभ सन 2019 में चीन से हुआ, और फिर यह महामारी सारी दुनिया में आग की तरह फैल गई। सभी ओर से आबाज आ रही थी हिंसा और मांसाहार को त्याग कर ही कोरोना जैसी जानलेवा महामारी से बचा जा सकता हैं। इस महामारी से लड़ने भगवान महाबीर का अहिंसा शाकाहार सिद्धांत प्रासंगिक है। शाकाहारी समाज के लिये यह सुखद संदेश है कोरोना महामारी से पीड़ित दुनिया के लगभग सभी देशों में स्वस्थ्य रहने मांसाहार त्याग कर शाकाहार को स्वीकार किया जा रहा है।

विश्व प्रेम ही भगवान महावीर का दिव्य संदेश है। भगवान महावीर के इसी सिद्धांत को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीवन का मूलमंत्र माना था। हमारे भारत की यह नीति है किसी दूसरे देश की भूमि मत हड़पो। सन 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान युद्ध में पश्चिमी पाकिस्तान जीतकर उस पर कब्जा न कर स्वतंत्र बंगलादेश बनाया।

भगवान महावीर का मंगल उपदेश था, पाप से घ्रणा करो, न कि पापी से। उन्होंने विरोधी को कभी विरोध से नहीं वरन सद्भावना एवं शांति से जीता। भगवान महावीर ने दुनिया को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पावन संदेश दिया, इस मार्ग पर चलकर उन्होंने सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त किया। उन्होंने अपना कल्याण किया एवं मोक्ष मार्ग बताया। भगवान महावीर ने कहा-आत्मा के चार बड़े शत्रु हैं काम, क्रोध,लोभ और मोह। इनके चक्कर में पड़ा हुआ व्यक्ति जीवन में कभी अच्छे कार्य नहीं कर पाता। स्व कल्याण के लिये इन पर विजय प्राप्त करना बहुत आवश्यक है।

विश्व वंदनीय भगवान महावीर के जीवन एवं दर्शन का गहराई से अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं, वे किसी एक जाति या सम्प्रदाय के न होकर सम्पूर्ण मानव समाज की अमूल्य धरोहर हैं। वह सबके थे और सब उनके थे। वह स्वयं क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे, उनके मुख्य गणधर इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण थे तथा उनकी धर्मसभा (समवशरण) में सभी धर्मो और जातियों के लोग उनकी दिव्य देशना, मंगल उपदेश सुनने के लिये आते थे। उन्हें केवल जैनों या जैन मंदिरों तक सीमित रखना उनके उद्दात एवं विराट व्यक्तित्व के प्रति अन्याय है वह जैन नहीं जिन थे। इन्द्रियजन्य वासनाओं और मनोजन्य कषायों को जीत लेते हैं,वे कहलाते हैं जिन। किसी का भी कल्याण जैन बनकर नहीं, जिन बनकर ही हो सकता है। भगवान महावीर ने कहा है त्याग व तपस्या से जीवन महान बनता है। श्रावकों को अपने आचरण में अहिंसा तथा जीवन में अपरिग्रह रखना चाहिए।

युग दृष्टा, अहिंसा, करुणा, परोपकार की पावन प्रेरणा देने वाले भगवान महावीर के 2551 वे निर्वाणोत्सव के पुनीत अवसर पर हमे चिंतन करने की आवश्यकता है। वर्तमान में चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध,विश्व में बढ़ रहे अलगाववाद, आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, हिंसा की निरंतर बढ़ती प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने भगवान महावीर के सिद्धांत प्रासंगिक हैं। महावीर के सिद्धांत प्राणीमात्र के लिए हितकारी हैं।आज हम त्याग, सेवा, परोपकार के मार्ग पर चलने के बजाय अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने में लिप्त हो गये हैं। वर्तमान में नई पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने के स्थान पर उन्हें गुमराह किया जा रहा है, नई पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से विमुख होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रही है। समाज का नेतृत्व करने बाले ही पतन के मार्ग चलने लगे तो नई पीढ़ी को कैसा आदर्श मिलेगा। क्रांतिकारी जैन संत समाधिस्थ मुनि तरुण सागर जी महाराज ने कड़वे प्रवचन करते हुए कहा था भगवान महावीर को जैन मंदिर की चार दीवारी से बाहर निकाल कर नगर के मुख्य चौराहे पर लाना होगा, तभी जनमानस भगवान महावीर जीवन दर्शन को समझ सकेगा।

दुनिया में सुख शांति की स्थापना करने के लिये हमें हर कीमत पर भगवान महावीर के बताये मार्ग पर चलना होगा। तभी भारत की प्राचीन संस्कृति और विरासत की रक्षा होगी। भारत ने कभी हिंसा में विश्वास नहीं किया। हमारा विश्वास भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलकर दूसरों की जान लेकर जीने में नहीं वरन अपनी जान की बाजी लगाकर दूसरों की रक्षा करने में है। अलगाव वाद,साम्राज्यवाद, तानाशाही से विश्व मुक्त हो इस हेतु भगवान महावीर द्वारा बताये मार्ग का अनुशरण करने में ही हम सबका कल्याण होगा। भगवान महावीर का जन्मोत्सव एवं निर्वाणोत्सव मनाकर हम आज औपचारिकता ही कर रहे हैं। आवश्यकता है उनके द्वारा बताये मार्ग पर चलने की।

भगवान महावीर के उपदेश को निम्न पंक्तियां सार्थक करती हैं:-

"मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,"

"दीन दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत वहें।

नोट:- लेखक वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार है।

श्रमण धर्म ही सनातन धर्म है

– कैलाश मड़बैया

सनातन का अर्थ होता है जिसका न आदि है, न अन्त। आशय यह कि जो शाश्वत है। वही जो आदि काल से चला आ रहा और अन्तहीन है सदैव चलता चला जायेगा—सनातन माना जाता है। हांलॉकि इन दिनों 'मीडिया' में कुछ मठाधीशों द्वारा यह जोर शोर से प्रतिपदित किया जा रहा है कि हिन्दु धर्म ही सनातन धर्म है। अपने धर्म को गौरवान्वित करने के लिये इसमें कोई बुराई भी नहीं है। सभी को अपने अपने धर्म पर गर्व होना चाहिये पर हम 'ही'महान हैं, यह 'ही' शब्द उचित नहीं प्रतीत होता है। क्योंकि इससे अन्यों की हीनता का प्रदर्शन व उपेक्षा होती है। दरअसल यह भी एक भ्रम ही है कि हिन्दु कोई धर्म या जाति है। क्योंकि यह एक स्थापित तथ्य है कि हिन्दु एक संस्कृति है। धर्म तो शैव, वैष्णव ,जैन, बौद्ध आदि हैं। जाति भी ब्राम्हण, छत्रिय, वैश्य आदि होतीं हैं।

हम यहॉं कतिपय पुष्ट प्रमाणों को उल्लिखित कर यह सहज सिद्ध पाते हैं कि दरअसल श्रमण अर्थात् जैन धर्म सनातन धर्म है। श्रमण धर्म यों तो जैन धर्म को कहते हैं पर इसमें कुछ लोग बौद्ध धर्म को भी शामिल कर लेते हैं क्योंकि गौतम बुद्ध भी प्रारंभ में जैन धर्मी ही थे बाद में सरलीकरण कर वे बौद्ध धर्म के प्रवर्तक बने। हम यहॉं जैन धर्म.के सनातन होने के वास्तविक पौराणिक,साहित्यिक, शिलालेखीय पुरातात्विक प्रमाण; जैनग्रंथों से बाहर केद्ध प्रस्तुत कर रहे हैं जिनसे जैन धर्म के सनातन होने की पुष्टि होती है। यद्यपि जैन धर्म वाले अनेकान्तवादी दृष्टि रखते है। वे कहते है कि धर्म ही सनातन है, बाकी तो अपनी अपनी धारणायें हैं। कथित सनातन हिन्दु धर्म में सर्वाधिक प्रचीन ग्रंथ वेद माने जाते हैं जिनसे अपनी सनातनता की वे बात करते हैं। पर इन्ही वेदों में अर्हन् अर्थात् जैन तीर्थंकर का उल्लेख वातरशना या केशी/ऋषभ नाम से हुआ है। जिसका तो स्पष्ट आशय है कि वेदों से पहले भी जैन धर्म था तभी न,जैन तीर्थंकरों का जिक्र वेदों में किया गया है तो फिर जैन धर्म,हिन्दु धर्म से ज्यादा प्राचीन यानी सनातन हुआ न? कतिपय तथ्य देखिये—प्राचीन ऋग्वेद में बृहस्पति द्वारा राजा पुरुवा के पौत्रों को जैनधर्म में दीक्षित किये जाने का उल्लेख मिलता है जिससे भी प्रमाणित होता है कि जैनधर्म प्राग्वैदिक है। यजुर्वेद के अध्याय १९ के मंत्र१४ के अनुसार 'आतिथ्यरुपं मासो महावीरस्य नग्रहु:'। एक अन्य हिन्दु पावन ग्रंथ श्रीमद् भागवत पुराण में तो अनेक स्थानों पर जैन तीर्थकरों का उल्लेख मिलता है।

अध्याय१ श्लोक ११ देखें—

'धर्मवृवीषी धर्मज्ञ धर्मोसि वृषभरुपधृक'

वृषभ यानी प्रथम जैन तीर्थकर ऋषभदेव को धर्म स्वरूप कहा गया है। यहॉं तक मिलता है कि भगवान विष्णु ने राजा नाभि के यहॉं मरु देवी के गर्भ से ऋषभदेव के रुप में अवतार लिया था। ऋषभदेव के सौ पुत्र थे जिनमें ज्येष्ठ भरत हुये। इन्ही भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा था। ऋषभ देव ने पुत्र भरत को दक्षिण दिशा में स्थित हिमवर्ष दिया था जिसके कारण वर्ष, भारत में जुड़ने से यह देश भारतवर्ष कहलाया। ब्रह्माण्ड पुराण २/१४में ऋषभनाथ को क्षत्रियों का पूर्वज कहा गया है। अथर्ववेद के अध्याय१५ में दिगम्बर जैनों को व्रात्य पुरुषों के रूप में वर्णित किया गया है। यजुर्वेद में तो ऋषभनाथ, अजितनसथ और अरिष्टनेमि आदि तीथग्ंकरों के भी वर्णन उपलब्ध हैं।

अब <u>पुरातात्विक प्रमाणों</u> में देखें तो सिंधु घाटी सम्यता की हड़प्पा मोहनजोदड़ों की खुदाई में प्राप्त सीलों के धड़ों में निर्गन्थ कायोत्सर्ग मुद्रा जैन तीर्थकरों की ही मानी गई, मिलीं है। जैन शास्त्रों के साथ वैदिक साहित्य में भी उक्त जैन तीर्थकरों का भरपूर वर्णन मिलता है। जहॉं तक <u>शिलालेखीय</u> प्रमाणों की बात है तो ईसा के २७५ वर्ष पहले के दिल्ली के अशोक स्तम्भ में 'निग्गंठ' शब्द जो आया है वह जैनियों के निर्गन्थ शब्द का ही द्योतक है जो जिन तीर्थकरों की वीतरागता का परिचायक है। यह लगभग ढ़ाई हजार वर्ष पुराना प्रमाण है। उड़ीसा के उदयगिरि खण्दारगिरि स्थित हाथी गुफा के खारवेल कालीन शिलालेख तो सर्वविदित हैं कि 'नमो अरह तानं, नमो सव सिधानम।' यह जिन णमोकार मंत्र का मूल वाक्य ही,यहॉं अंकित मिला है जो प्राचीनता का अकाट्य प्रमाण है। संस्कृत के पुरातन नाटक मुद्रा राक्षस में भी कहा गया है—जैन मुनियों की भक्ति करो वे मोह निवारण के वैद्य हैं.

—'सासणमलिहन्तणं...........'।

आधुनिक मनीषियों में पूर्व राष्ट्पति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी चर्चित पुस्तक 'इण्डियन फिलॉस्फी' में लिखा है कि इस तथ्य के पुष्ट प्रमाण हैं कि ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी में तीर्थंकर ऋषभदेव की पूजा होती थी।

प्रख्यात विद्वान डॉ. जिम्मर जैन धर्म को आर्यो का पूर्ववर्ती धर्म मानते हैं। देखें 'इण्डियन फिलॉस्फी 'का पृष्ठ ४। रायल एशियाटिक सोसायटी के अध्यक्ष रेवरेण्ड मानते हैं कि प्राचीनकाल से अब तक जैनधर्म प्रचलित है, जिमनोसोफिस्टों केवल जैन ही थे, बौद्ध या अन्य कोई नहीं थे। सिकन्दर ने भी माना कि तक्षसिला में उन्हें जैन मिले थे।

जुहार शब्द जैन संस्कृति के अभिवादन का पारम्परिक शब्द माना जाता है। रामचरित मानस के अयोध्या काण्ड में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं—'पुरजन करेहु जोहारु घर आये'। यह जैन परम्परा का जुहार ही है।.

दक्षिण भारत में जैनधर्म की स्थापना और प्राचीनता के अनेक ग्रंथ मिलते हैं। यहीं से आठवीं शताब्दी में जैन धर्म श्री लंका में भी गया। प्रमाण हैं कि बौद्ध धर्म के पहले श्रीलंका में जैन धर्म बहुत सुदृढ़ तरीके से स्थापित हो चुका था। प्रमाण तो अनेक राजवंशों के मिलते हैं पर हम केवल बहुचर्चित लंकाधिपति रावण के बारे में बताना चाहेंगे कि रावण ने त्रिकुटागिरि में भव्य जैन मंदिर बनवाया था। अपनी रानी मंदोदरी के अनुरोध

पर रावण ने रत्न जणित जैन प्रतिमा का निर्माण भी कराया था। महावंश पुराण में उल्लेख है कि ईसापूर्व दसवीं सदी तक जैन धर्म श्री लंका में प्रमुख धर्म बन चुका था। जैन ग्रंथों में तो प्राचीन होने के प्रमाण जगह जगह मिलना स्वाभाविक ही है। अतएव प्रत्येक कोंण से यह पुष्ट है कि जैनधर्म ही सनातन धर्म है।

वस्तुत: जैनधर्म व्यक्ति केन्द्रित नहीं अपितु व्यक्तित्व केन्द्रित है। इसके तथ्य वैज्ञानिक तर्को पर खरे उतरते हैं। इसमें आत्मा ही परमात्मा है।सृष्टि का रचयिता कोई ईश्वर नहीं। यह प्रकृति प्रदत्त है।ईश्वर कर्ता भी नहीं है।इसके मूल णमोकार महामंत्र में किसी नाम को प्रणाम नहीं वरन् आत्मजयी व्यक्तित्वों को नमन किया जाता है। जैन भी कोई जन्मना जाति नहीं वरन् जिसने भी इन्द्रियों को जीत लिया वही जैन व आराध्य जिनेन्द्र है। जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ और अन्तिम यानी २४वें महावीर स्वामी वर्तमान काल के माने जाते हैं। वस्तुत: जैन धर्म कर्म प्रधान धर्म है। आडम्बरों को काई जगह इसमें नहीं है। इसमें जो धारण किया जा सके वही धर्म है। ० ० ० ० ०

संदर्भ–१–वेदों के अतिक्त लेख में वर्णित कृतियां। २–अनेकान्त जुलाई २४ ,३–कादम्बनी में पूर्व प्रकाशित लेखक का निबंध। आदि आदि आदि । ० ० ० ० ०

अतिशय क्षेत्र हुमचा पद्मावती, कर्नाटक

कटनी(मध्यप्रदेश)

ये प्रतिमा जी अतिशय क्षेत्र हुमचा पद्मावती, कर्नाटक में है। श्री पार्श्वनाथ भगवान की ये प्रतिमा उत्तर पुराण में वर्णित पार्श्वनाथ चरित्र के अनुसार है। प्रतिमा जी में जो विशेषता है वह यह है कि इसमें पद्मावती ने भगवान के ऊपर छत्र लगाया हुआ है ना कि भगवान को अपने ऊपर बैठाया है। जैसा कि आजकल की अनेक प्रतिमाओं में देखने को मिलता है। उत्तर पुराण में यही वर्णन है। भारत में तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी की मात्र कुछ ही ऐसी प्रतिमाएं हैं जो कि उत्तर पुराण के अनुसार है। जैसे : कटनी(मध्यप्रदेश), हुमचा पद्मावती(कर्नाटक) आदि।

इस प्रतिमा को ध्यान से देखिए। इस प्रतिमा पर शिल्पकार ने अद्भुत कारीगरी की है। प्रतिमा के दोनों और कमठ और उसकी भार्या ने

हुमचा (कर्नाटक)

अलग-अलग रूप बनाकर मुनि पार्श्वनाथ पर जो उपसर्ग किया था, वह दर्शाया गया है। भगवान के केवलज्ञान होने पर कमठ को अपनी गलती का अनुभव हुआ और वह अपनी भार्या के साथ भगवान के चरणों मे बैठ गया, यह भी प्रतिमा जी मे दर्शाया गया है। इस तरह की शिल्पकला भारत में संभवत: किसी और प्रतिमा जी में नही है। प्रतिमा लगभग सातवीं शताब्दी की है। दर्शन कर लाभ लें।

अपराजेय दिगंबर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

- डॉ. नरेन्द्र जैन भारती सनावद

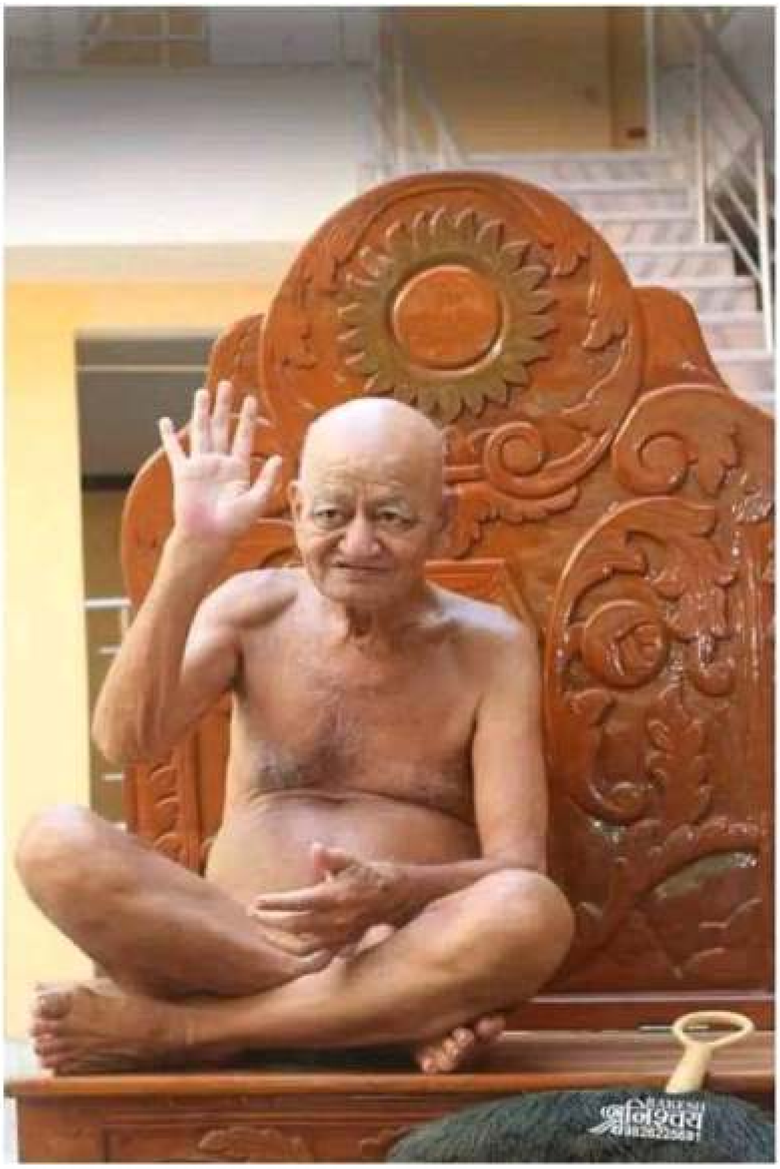

मनुष्य का जीवन तब सार्थक होता है, जब वह सांसारिक कार्यों से विमुख होकर, वैराग्य अवस्था प्राप्त कर, ज्ञान, ध्यान, संयम और तप साधना के द्वारा निर्विकल्प होकर धर्म मार्ग पर अग्रसर होता है । परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ऐसे ही महान दिगंबर मुनि थे, जिन्होंने आत्मानुभव करते हुए मोक्ष प्राप्ति हेतु कठोर तप साधना की और समस्त मानव समाज को धर्म का यथार्थ मार्ग दिखाकर नश्वर देह का त्याग किया।

आगम और अध्यात्म को जीवन का अभिन्न अंग बताते हुए परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, जीवन के हर क्षेत्र में अपराजेय रहे। आपने 10 अक्टूबर सन 1946 को शरद पूर्णिमा के दिन आश्विन शुक्ल पंचमी को कर्नाटक राज्य के सदलगा ग्राम में पिता मल्लप्पा जी अष्टगे तथा माता श्रीमती जी के घर विद्याधर के रूप में मानव तन पाया, परंतु इस शरीर का उन्होंने यथार्थ उपयोग ज्ञान ध्यान और अध्ययन के लिए किया। धार्मिक संस्कारों के कारण आप बाल्यावस्था में ही संसार, शरीर और भोगों से दूर रहे तथा जैनागम का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने के बाद आपने आषाढ़ कृष्ण पंचमी वि. सं. 2025 को अजमेर में परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज से मुनि दीक्षा ग्रहण कर मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए त्याग मार्ग पर अग्रसर हुए।आपकी तप साधना लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग पर आगे चल रही थी। तभी आपके दीक्षा गुरु आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज ने मार्गशीर्ष कृष्ण एकम् वि. सं. 2029 में अपना आचार्य पद त्याग कर आचार्य श्री विद्यासागर जी को अपना आचार्य पद प्रदान किया और उन्होंने अपना निर्यापकाचार्य बनाकर, उनसे सल्लेखना धारण कर समाधि भावना को साकार करने के लिए अग्रसर हुए। भारतीय संस्कृति के जैन परंपरा के इतिहास में यह ऐसी प्रथम घटना थी। जिसमें त्याग मार्ग का सच्चा साकार दृश्य उपस्थित हुआ।

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की श्रमणचर्या जैनागम के अनुकूल अत्यंत प्रभावी रही। आपने 55 वर्षों तक अपनी सुंदर सुडौल काया का सम्यक उपयोग तप साधना में किया । आपकी त्याग और तपस्या जीवन भर लोगों को प्रभावित करती रही । आज सर्वाधिक मुनि, आर्यिकायें आपके द्वारा दीक्षित तथा आपकी आज्ञानुवर्तिनी बनकर धर्म साधना करते हुए जैन धर्म का प्रचार - प्रसार कर लोगों को सन्मार्ग पर लगा रही हैं । आपके द्वारा दीक्षित मुनि श्री समय सागर जी, मुनि श्री योग सागर जी, मुनि श्री समता सागर जी, मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी, मुनि श्री प्रमाण सागर जी सहित अनेक मुनिगण अपनी मुनिचर्या से सभी को प्रभावित कर रहे हैं। वर्तमान आचार्य श्री समय सागर जी आपकी परंपरानुसार संघ को कुशलता के साथ संचालित कर रहे हैं यह गौरव की बात है। मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज श्रावक संस्कारों, ज्ञान गोष्ठियों, वाचना और अन्य धार्मिक आयोजनों के माध्यम से अनुकरणीय उदाहरण पेश कर रहे हैं। अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार कर उनका कायाकल्प करना तथा नवतीर्थों तथा मंदिरों के निर्माण की प्रेरणा आपको अपने दीक्षा प्रदाता संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी से ही मिली।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अपने कार्यकाल में सर्वोच्च प्रभावी संत रहे। उन्होंने मूलाचार में वर्णित मुनि धर्म का अक्षरस: पालन किया। आप हमेशा आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए तत्पर रहे। समय का सदुपयोग कैसे किया जाये, इसकी सार्थक प्रेरणा आचार्य श्री के जीवन से मिलती रही है। आपके कठोर अनुशासन का परिणाम था कि आपके संघ में शिथिलता नहीं पनप सकी और संघ का अनुशासन प्रभावी रहा। अनुशासन

के लिए आपकी मूक आज्ञा भी दृष्टिगोचर रही। जिन्होंने आपकी आज्ञा की अवहेलना की, वह उनके संघ से हमेशा दूर रहा। एक बार मै कुंडलपुर में वंदनार्थ परिवार सहित गया। उस समय वहाँ प्रातस्मरणीय संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज संघ सहित विराजमान थे। संघ के एक मुनि श्री प्रबोध सागर जी महाराज एक अलग स्थान पर वृक्ष के नीचे चबूतरे पर अलग बैठे हुए थे। आपका जन्म सनावद में हुआ तथा लौकिक शिक्षा देने का अवसर मुझे भी मिला। मैंने नमोस्तु निवेदन कर अलग बैठने का कारण जानना चाहा। तब आपने बताया कि आचार्य श्री जब मुनियों, साधुओं की स्वाध्याय की विशेष क्लास लगाते हैं तब स्वाध्याय शुरू करने से मात्र 5 मिनट बाद तक पहुंचना जरूरी है। आज मुझे आवश्यक कार्य से विलंब हो गया। अतः आचार्य श्री की आज्ञानुसार नहीं बैठकर चिंतन कर रहा हूँ। इससे संघ की अनुशासन का पता चलता है। संघ के इसी अनुशासन के कारण संघ और संघ के आचार्य दोनों लंबे समय तक संपूर्ण भारत वर्ष में चर्चित रहे। आपने अपने दीक्षा गुरु आचार्य श्री ज्ञान सागर जी से तो अध्ययन किया ही, सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्वाध्याय को भी प्राथमिकता दी। जिसके कारण आपकी वैराग्य भाव में भी निरंतर निखार आता गया। आपका विशुद्ध आचरण और निर्दोषचर्या के सामने सभी फीके रहते थे। आप दर्शन विशुद्धि, सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति तथा कर्मों को नष्ट करने के लिए दोष रहित आहार ग्रहण करते थे ताकि शरीर तप साधना के लिए चलायमान बना रहे। यह चर्या उनके संसार, शरीर और भोगों के प्रति पर्याप्त उदासीनता का यथार्थ बोध कराती है। आप हमेशा संकल्प - विकल्प, द्वन्द, मोह कलंक से रहित तथा निर्मल स्वभाव वाले रहे तथा निर्दोष साधक बनकर निरंतर मोक्ष पथ पर आगे बढ़ते रहे।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने दिगंबर परंपरा के अनुसार जैन धर्म, संस्कृति और संस्कारों को पुनः प्रतिष्ठित करने में बहुत बड़ा योगदान दिया, साथ ही भारतीय संस्कृति के अनुरूप गौ संरक्षण के लिए जगह-जगह गौशालाओं के निर्माण प्रेरणा दी । हथकरघा उद्योग को बढ़ावा तथा भाषायी एकता को मजबूत करने के लिए मातृभाषा के रूप में हिंदी भाषा को स्वीकार करने तथा "इंडिया नहीं भारत बोलो" की प्रेरणा देकर राष्ट्र प्रेम और देश की एकता को मजबूत बनाए रखने की प्रेरणा देखकर संपूर्ण देशवासियों का पर्याप्त स्नेह पाया। प्राचीन तीर्थ क्षेत्रों का विकास हो इसलिए प्रकृति के सुरम्य वातावरण के बीच स्थित प्राचीन तीर्थों पर आपने चातुर्मास किये।आप हमेशा सामाजिक जीवन को धर्म अनुरूप बनाने में तत्पर रहे, साथ ही आत्महित का पर्याप्त ध्यान रखा। इसलिए आपकी मुनीचर्या वक्त की कसौटी पर खरी उतरी और आप निर्विवाद रूप से दिगंबर मुनि परंपराओं के सर्वमान्य आचार्य रहे। "संत शिरोमणि" सभी लोगों के भावनात्मक विचारों का प्रस्तुतीकरण है। आज आप हमारे बीच भौतिक शरीर से नहीं है लेकिन उनका बताया गया मार्ग हम सभी के लिए मोक्ष मार्ग पर चलने की प्रशस्त प्रेरणा हमेशा देता रहेगा।

छत्तीसगढ़ के प्राचीन जैन तीर्थ चंद्रगिरि पर शनिवार - रविवार दरम्यानी रात में माघकृष्ण अष्टमी के दिन आपने सल्लेखना पूर्वक देह त्याग किया। दिगंबर जैन धर्म अनुसार आपने अपने आचार्यत्व में अनेक सुश्रावकों को मुनि बनाकर तथा सामान्य श्रावकों को मुनिचर्या का सच्चा दिग्दर्शन कराकर मुनि भक्ति का स्थाई प्रभाव आपने जन सामान्य पर छोड़ा, इससे संपूर्ण देश सदैव आपका ऋणी रहेगा। समाधिस्थ पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में सादर नमोस्तु।

औषधालय परिवार की साधारण सभा

स्व "डॉ प्रेमचंद घाटे स्मृति" श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पारमार्थिक औषधालय की २२ वीं वार्षिक साधारण सभा २०२४ का आयोजन जवरी बाग नसिया के सभागार मे हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया।

दीप प्रज्वलन सभा के अध्यक्ष प्रसिद्ध समाजश्रेष्ठी श्री एस के जैन साहब एवं श्रीमती चित्रा जी जैन द्वारा किया गया।

संस्था के अध्यक्ष आदरणीय श्री रमेश जी गंगवाल द्वारा उद्बोधन द्वारा संस्था की अंकेक्षित आय व्यय पत्रक एवं अन्य की जा रही सेवा गतिविधियों की जानकारी सभा के समक्ष रखी गई एवं पारित की गई।

औषधालय परिवार द्वारा तीर्थरक्षा कमेटी मध्यांचल के नव निर्वाचित साथी भाई श्री D.K जैन का, वरिष्ठ डॉ यशलहा जी एवं औषधालय में अपनी निरंतर सेवा दे रहे डॉ UC जैन साहब एवं श्री अनिलजी जैन और राजकुमारजी घाटे का स्वागत किया गया। आगामी सत्र के लिए अध्यक्ष पद के लिए श्री रमेश गंगवाल एवं कार्यकारी अध्यक्ष के लिए श्री राजकुमार जी घाटे का सर्वानुमति से चयन किया गया। सभी सहयोगियों व उपस्थितों धन्यवाद देकर सभा समाप्त हुई। सभा पश्चात सामूहिक सहभोज कर सभा का

नेमिनाथ की निर्वाण-भूमि गिरनार पर्वत की पांचवीं और अन्य तीनों टोंकें-तथ्य, प्रमाण सहित दिगम्बर जैनधर्म की थी, है, और सर्वाधिकार सिर्फ न्यायालय से ही संभव

- निर्मलकुमार पाटोदी, इन्दौर

सोचनीय,विचारणीय, चिंताजनक, असहनीय स्थिति:

भारत हमारा धर्म निरपेक्ष संविधान सम्मत लोकतंत्रीय सत्तात्मक राष्ट्र है। वसुदेव कुटुंम्ब भावना प्राचीनकाल से इस धर्मधरा में पल्लवित-पोषित होती रही है। स्वत्रंरोत्तर काल में कुछ अधार्मिक, असामाजिक और असहिष्णु प्रवृत्ति, क्षुद्र मनोवृत्ति के अधार्मिक मानसिकता से ग्रस्त, अंधविश्वासी और उन्मादी ने राजनैतिक और प्रशासनिक संरक्षण से प्रोत्साहित हो गये। भारत, भारतीय और भारतीयता की उपेक्षा, अवहेलना करते हुए अल्पसंख्यक दिगम्बर जैन धर्म के गिरनार पहाड़ पर स्थित प्राचीन तीर्थ-धर्मस्थलों को न केवल अपरिमित आघात पहुंचा दिया है। अपितु गुजरात राज्य के अहमदाबाद स्थित उच्च न्यायालय के 17 फरवरी 2005 को प्रदत्त स्थगन आदेश को जानबूझकर ठुकराते हुए, संविधान द्वारा प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता की परवाह नहीं करते हुए उन पर कब्जा करके जैन पुरातात्विक धार्मिकता को ही ध्वंस्त कर दिया है। उदाहरण के लिये गिरनार पहाड़ की क्रमश: दूसरी टोंक जहां से जैन मुनिश्री अनिरुद्धकुमार, तीसरी टोंक से मुनिश्री शंभुकुमार, चौथी टोंक से मुनिश्री प्रद्युनकुमार और पांचवीं टोंक में भगवान नेमिनाथ की निर्वाण स्थली पर पाषाण में उत्कीर्ण चरण-चिह्नों और पाषाण में उत्कीर्ण प्रतिमा पर अनधिकृत अधिकार कर उनका स्वरूप परिवर्तित करने का अक्षम्य अधार्मिक कार्य किया है। उनके तथाकथित अपराध को गुजरात सरकार का प्रशासन, पुलिस और पुरातत्व विभाग रोकने में पूरी तरह से विफल रहा है। परिणाम यह हुआ कि जैन समाज के पूज्यनीय संत, त्यागी, व्रति और श्रद्धलुओं के पूजा, वंदना, आराधना, उपासना करने और भगवान की जय तक नहीं बोलने में हर संभव बाधाएं डालते रहे हैं।

गिररनार तीर्थरक्षा का एकमात्र उपाय:

धर्मांध, और जैन धार्मिक आस्था को बचाने, उन धर्म-उपासना स्थलों पर पुन: अधिकार प्राप्त करने और बचाने के लिए दिगम्बर जैन-धर्म समाज के अनुयाईयों के सामने वर्तमान प्रशासन के पिछले बीस वर्षों से असहयोग को देखते हुए एकमात्र रास्ता न्यायालय से न्याय पाना ही बचा है। समाज सतत् जानकारी से

अवगत होगा, तो पूरा समाज तीर्थरक्षा के लिए आर्थिक और अन्य हर संभव सहयोग देगा।

सनातन बचाने के नाम पर जैनतीर्थ पर बलात कब्जा:

सनातन का तात्पर्य शाश्वत्, अनादि निधन है।सनातन शब्द को किसी एक धर्म से जोड़कर पूर्वाग्रही धारणा बनाने से सामंजस्य को हानि होगी। दिगम्बर जैनधर्म भारत का प्राचीनतम ऐतिहासिक धर्म है। जैन दर्शन की दृष्टि से सृष्टि अनादि और अनंत है। वह किसी ईश्वर की निर्मिति का फल नहीं है। अपितु स्वाभाविक परिणमन का फल है। सनातन के नाम पर दिगम्बर जैनधर्म के गिरनार पहाड़ पर स्थित पूज्यनीय स्थलों पर कब्जा और अधिकार करने की प्रवृति जैनधर्म धर्म के अस्तित्व को समाप्त कर रही है।

जैनधर्म का उदयकाल:

जैनधर्म के अनुसार सभ्यता का विकास कर्मभूमि से प्रारंभ होता है। असि, मसि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प जैसी कलाओं का जन्म हुआ था। जैन संस्कृति में 'कुलकर' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। कुलकरों की संख्या पन्द्रह है। कुलकर समाज को व्यवस्थित रूप देने वाली एक संस्था उदित हुई थी। जैन साहित्य और संस्कृति में कुलकर का वहीं स्थान है, जो वैदिक संस्कृति में मनु का है।

भारतवर्ष का प्राचीनतम स्वयम में सर्वथा पूर्ण स्वतंत्र जैन धर्म है। यह वीतरागता का पोषक धर्म है। इसके सभी चौबीस तीर्थंकर वीतरागी रहे हैं। यह वीतराग परंपरा तब से अब तक मुनि, उपाध्याय और आचार्य रूप में जारी है। जिसकी पहचान श्रमण नाम से भी है।

लेखक माणकचंद जैन (गदिया) एडवोकेट की कृति-'जैनत्व-अजैन-दृष्टि में' पृष्ठ-11, डॉ.ए. गिरनार के अनुसार-"जैन-धर्म में मनुष्य की उन्नति के लिये सदाचार को अधिक महत्व प्रदान किया गया है। जैन-धर्म अधिक मौलिक, स्वतंत्र तथा सुव्यवस्थित है। ब्राह्मण-धर्म की अपेक्षा यह अधिक सरल, सम्पन्न एवं विविधतापूर्ण है और बौद्ध-धर्म की भांति शून्यवादी नहीं है।" इसी पुस्तक के पृष्ठ-14 पर-"मुझे प्रतीत होता है कि प्राचीनकाल में चार बुद्धया मेधावी महापुरुष हुए है। इनमें पहले आदिनाथ या ऋषभदेव थे। दूसरे नेमिनाथ थे। ये नेमिनाथ स्कैंडिनेविया निवासियों के प्रथम ओडिन तथा चीनियों के प्रथम 'फो' नामक देवता थे।" राजस्थान-कर्नल टाड।

धर्म की दो धाराएं:-

भारत में पहली श्रमण और दूसरी वैदिक या सनातन धर्म की धाराओं का उदय हुआ। । सनातन से आशय धर्म सनातन है, अर्थात् शाश्वत धर्म। भारत का शाश्वत जैनधर्म है। वैदिक युग में 'आर्हत' संस्कृति का प्रसार व्याप्त था। 'आर्हत', 'अर्हत' के उपासक थे। तीर्थंकर पार्श्वनाथ के समय तक जैनधर्म के लिए 'आर्हत' शब्द ही प्रचलित था। यह शब्द वैदिक युग के पहले भी प्रचलित था। इस काल में 'पणी' और 'व्रात्य' अर्हत धर्म को मानने वाले थे। पणि भारत के आदिम व्यापारी थे, ज्ञान में बढ़े-चढ़े थे। आगे चल ये वणिक हो गये, जो वर्तमान में ' बनिये' नाम से पहचाने जाते हैं। 'आर्हत' आत्मा को सर्वश्रेष्ठ ,सर्वोपरि मानते थे। गिरनार को सनातन कहकर उस पर संख्याबल के दम पर अधिकार मानने वाले सनातन शब्द का मनमाना अर्थ निकालकर स्वयं से छलावा कर रहे हैं। आचार्य पुलकसागर का

तीर्थ:

'तीर्थ' शब्द संस्कृत की 'तृ' प्लवनतरणयो: धातु से बना है। जिसका अर्थ जो डूबकर, डुबकी लगाकर पार उतरता है, तीर्थ कहलाता है। जो इस अपार संसार-भव-समुद्र से पार करें, उस स्थान को तीर्थ कहते हैं। स्थान-विशेष तीर्थ कहलाते हैं। इसलीए तीर्थ तरण-स्थल के साथ-साथ तारण (पार उतारनेवाले) स्थल होते हैं। धर्म के अनुयायी तीर्थों की यात्रा और वंदना तन्मय होकर बड़ी श्रद्धा, आस्था और भक्ति से करते हैं। तीर्थ स्थान परम शांति और कल्याण के लिए हैं। तीर्थ पवित्र होते हैं और जो इनके सम्पर्क में आता है, उसे पवित्र कर देते हैं। जैनधर्म में तीर्थक्षेत्र की वंदना से पुण्य संचय होता है। पुण्य संचय से व्यक्ति सत्कर्म में प्रवृत्त होता है। जैन परंपरा का ग्रंथ 'समाधिसतक' में संसार-समुद्र से तरन तारण करानेवाले, पार उतारनेवाले को तीर्थ कहा गया है—"संसारोत्तरणहेतुभूतत्वात् तीर्थम्।" आचार्य जिनसेन स्वामी ने आदिपुराण में लिखा है कि जो भवसागर से पार करें , वहीं तीर्थ है। जैन परंपरा के प्राचीन ग्रंथों में तीर्थ शब्द 'क्षेत्र-मंगल' भी होता है, जिसका अर्थ जिस क्षेत्र में जाने से अहंकार, दंभ, मोह, ममत्वबुद्धि का गलन होता है, क्षरण होता है, वह स्थान-विशेष 'क्षेत्र-मंगल' कहलाता है। षट्खण्डागम में विभूतियों के द्वारा योगासन, वीरासन आदि आसनों के माध्यम से योगाभ्यास व जितेन्द्रियता आदि गुण प्राप्त किये गए हों, ऐसे क्षेत्र-विशेष-परिनिष्क्रमण-क्षेत्र, केवलज्ञानोत्पत्ति-क्षेत्र और निर्वाण क्षेत्र को 'क्षेत्र-मंगल' कहते हैं। जैसे गिरनार, चंपापुर क्षेत्र हैं-तत्रक्षेत्र-मंगलगुणपरिणतासनपरिनिष्क्रमण- केवल-ज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाण-क्षेत्रादि: तस्योदाहरणम्-उर्जयन्त-चंपा पावानगरादि: गोमट्टसार में उर्जयन्तआदि की प्राप्ति के क्षेत्र-मंगल आदि स्थान आत्मगुणों की प्राप्ति के साधन हैं-"क्षेत्र-मंगलमूर्जयन्तादिकमर्हदादीनां निष्क्रमण-केवलज्ञानादिगुणोत्पत्तिस्थानम्।" तप, ज्ञान और मोक्ष संसार-समुद्र से पार उतरने में सीधे कारक हैं, इसलिए उनके स्थल ही जैन तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित हुए। मुक्ति स्थल के तीर्थों, सिद्ध-क्षेत्र-रूप तीर्थों को ही जैन परंपरा में सबसे अधिक पूजनीयता प्राप्त हुई।

दिगम्बर जैन तीर्थंकर:

तीर्थंकर, तीर्थ के कर्ता होते हैं। भगवान आदिनाथ जैनों के सर्वप्रथम तीर्थंकर हुए।उन्होंने मानव संस्कृति की कम से कम छ: प्रवृत्तियां दीं। अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर महावीर हुए रहें। प्रथम तीर्थंकर को ऋषभदेव, ऋषभनाथ, आदिनाथ, आदिजिनेश्वर या वृषभनाथ भी कहते हैं। इनके दो पुत्र भरत और बाहुबली हुए हैं। भरत सम्राट चक्रवर्ती हुए और इनके नाम पर देश का नाम पर 'भारतवर्ष' हुआ।

गुजरातके जूनागढ़ का गिरनार:

एशियाई सिंहों (शेर) के लिये विख्यात् गिर-गिरनार जंगल क्षेत्र भारत के गुजरात प्रदेश में सौराष्ट्र क्षेत्र के जूनागढ़ नगर के निकट भवनाथ का एक भव्य, दिव्य और उतुंग पर्वत 'गिरनार' विद्यमान है। इसका उच्चत्तम शिखर 1,031 मी. (3,383 फीट ऊंचा है। निर्देशांक-21 डिग्री29'41"N, 70 डिग्री

30'20"E / 21.49472 डिग्री N, 70.50556डिग्री E है। पहाड़ियों की औसत ऊँचाई 3,500 फूट है। तलहटी में एक वृहत चट्टान पर अशोक के मुख्य 14 धर्मलेख हैं। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य तथा परवर्ती राजाओं द्वारा निर्मित तथा जीर्णोद्धारकृत जैन मंदिर का सुंदर वर्णन है। इस अभिलेख में रुद्रदमन के नाम और वंश का उल्लेख है। इस अभिलेख की चट्टान पर 458 ई. का एक अन्य अभिलेख गुप्तसम्राट स्कंदगुप्त के समय का भी है।

अरिष्टनेमि, नेमिनाथ बाइसवें तीर्थंकर:

पुराणों के अनुसार नेमिनाथ शौर्यपुर के राजा समुद्रविजय और रानी शिवादेवी के पुत्र हुएहैं। समुद्रिजय के अनुज ((छोटे भाई) का नाम वसुदेव था। जिनकीदो रानियां थीं—रोहिणी और देवकी। रोहिणी के पुत्र का नाम बलराम बलभद्र व देवकीनके पुत्र का नाम श्रीकृष्ण था। इस तरह नेमिनाथ श्रीकृष्ण के बाबा (ताऊ) के पुत्र थे। [4][5][6][7][8][9]10[10][11]

अरिष्टनेमि जैनधर्म के बाईसवें तीर्थंकर हुए हैं। ऋग्वेद (७.३२.२०) में नमि का और यजुर्वेद (२५.२८) में अरिष्टनेमि का उल्लेख हुआ है। महाभारत में अरिष्टनेमि के लिये नेमि जिनेश्वर और 'ताक्ष्र्य' शब्द का भी प्रयोग हुआ है। महाभारत से नेमिनाथ संबंधी निम्नलिखित उल्लेख उद्धृत किये गये हैं—अशोकस्तारणस्तार: शूर: शौरिर्जिनेश्वर: ॥२४९-५०, कालनेमि महावीर : शूर : शौरिर्जिनेश्वर : १४९९-८२, शांतिपर्व, २८८.४, २८८.५.६। ताक्ष्र्य-अरिष्टनेमि रे उपदेश में मोक्ष्य साध्य है। इसका संबंध जैनघर्म के बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि से ही है। इतिहास की दृष्टि से अरिष्टनेमि यदुवंशी कृष्ण के चचेरे भाई हुए (हरिवंशपुराण वैदिक १.३३.१)।

अरिष्टनेमि का निर्वाण-स्थल :

गुजरात राज्य के जूनागढ़ जिले में स्थित गिरनार पहाड़ पर स्थित पांचवीं टोंक से बाविसवें दिगम्बर जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ जी की आत्मा अन्य तीर्थंकरों के समान निर्वाण अर्थात् सिद्धत्व/मोक्ष को प्राप्त हुई। जैनधर्म के अनुसार सिद्धत्व का अर्थ जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाना है। गिरनार पर्वत की पांचवीं टोंक में स्थित पाषाण में उत्कीर्ण उनके चरण-चिह्न स्थापित है। झारखण्ड राज्य के मधुबन जिले में स्थित सम्मेदशिखर पर्वत पर से तो असंख्यात आत्माओं ने मुक्ति पायी है। पहाड़ ऊपर तेवीसवें भगवान पार्श्वनाथ के चरण-चिह्न टोंक से लेकर चन्द्रप्रभु की टोंक तक के क्षेत्र से कुल बीस तीर्थंकरों की आत्मा मोक्ष की ओर गमन हुई हैं। इसी प्रकार नेमिनाथ तीर्थंकर की आत्मा गिरनार पहाड़ की पांचवीं टोंक से मोक्ष की ओर गई है। उन्होंने इसी क्षेत्र से तप किया और केवल ज्ञान भी प्राप्त किया। जैनधर्म के तीर्थंकरों के चरण-चिह्न स्थली स्थायी होती है। उसका स्थान बदला नहीं जा सकता है। चरण-चिह्न की ही आस्था, वंदना, पूजा, भक्ति, भक्त करते हैं। नेमिनाथ का निर्वाण हो जाने के बाद चरण-चिह्न स्थल पर सौधर्म इन्द्र के द्वारा अपने वज्र से भगवान के लक्षण/ बनाया गया। स्वयम्भू स्तोत्र) में वर्णित:-"

ककुदं भुव खचरयोषषि-दुषित-शिखरैरलड्.कृत:
मेघ-पटल-परिवीत-तट-स्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा
॥127॥

वहतीति तीर्थमृषिभिश्च, सततमभिगम्यतेऽद्य च।
प्रीति-वितत-हृदयै:परितो, भृशमूर्जयन्त इति निश्रितोऽचल:
॥128॥

"हे ऊर्जयंत ! तू इस पृथ्वीतल के मध्य में ककुद के समान ऊँचा है, विद्याधर दंपती तेरे ऊपर विचरण करते रहते हैं, तू शिखरों से सुशोभित है, मेघपटल तेरे तट भाग को ही छू पाते हैं तथा स्वयं इन्द्र ने तेरे पवित्र अंग पर वज्र से नेमिनाथ भगवान के चिह्न अंकित किये थे।"

इसी बात का समर्थन करते हुए पुराणसार संग्रह में श्रीदामनंदी आचार्य ने भी लिखा है:-

कुलिशेन सहसाक्षो लक्षण पक्तिं लिलेख तत्रेश :
भव्यहिताय शिलायामद्यापि च शोभते पूता॥

इन्द्र ने अपने वज्र से वहाँ गिरनार पर्वत पर सिद्धशिला बनाकर उस पर भगवान् के लक्षण लिखे (या चरण चिह्न बनाये) वह सिद्ध शिला आज भी पवित्र शोभित हो रही है।

गिरनार क्षेत्र पर इंद्र ने मूर्ति स्थापित की थी:-

सौराष्ट्रे यदुवंशभूषणमणे: श्रीनेमिनाथस्य या।
मूर्तिर्मुक्ति यथोपदेशनपरा शांतामुधापोहनात्॥
वस्त्रैराभरणैर्विना गिरिवरे देवेन्द्र संस्थापिता।
चित्तभ्रांतिमपाकरोतु जगतो दिग्वाससां शासनम्॥20॥

सौराष्ट्र में गिरनार पर्वत पर यदुवंश भूषण श्रीनेमिनाथ तीर्थंकर श्री आयुध, वस्त्र और आभरण रहित, भव्य, शांत और मोक्षमार्ग का मौन उपदेश करने वाली जो मूर्ति स्थित है, वह इन्द्र द्वारा स्थापित की गयी है। वह संसार के चित्त की भ्रांति को दूर करें और इस संसार में दिगम्बर शासन को वृद्धिगत करें।

इन्द्र द्वारा चरण-चिह्न को चिह्नित करने के बाद जैन मान्यतानुसार समाज के श्रद्धालुओं के लिये ये चरण-चिह्न श्रद्धा, आस्था और वंदना करने के लिए वंदित हो जाते हैं। ये जीवन को मोक्षमार्ग की ओर तारने में सहायक हो जाते हैं। नेमिनाथ जिन्हें अरिष्टनेमि कहते हैं के ग्यारह में से प्रथम गणधर मुनि 'वरदत्त' का निर्वाण भी गिरनार पर्वत से हुआ था। स्वार्थवश गिरनार पर्वत पर स्थित जैन टोंकों, दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं पर कब्जा/अधिकार कपने की नियत से 'वरदत्त' नाम में से 'वर' अंश को जानबूझकर निकाल कर अपने 'दत्त' को जोड़कर 'दत्तात्रेय' करके प्रचलित / प्रचारित कर दिया गया है। जैनधर्म के पूज्यनीय संत, त्यागी, व्रति, और श्रद्धालु यात्री भक्ति-भाव से जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के चरण-चिह्नों की वंदना, पूजा, दर्शन, उपासना के लिये नहीं आवें, इसलिये पांचवीं टोंक में तथाकथित अजैन व्यक्तियों ने बैठकर भय, आतंक, मारपीट और हथियारों का सहारा लिया हुआ है। टोंक में अधिकार किया हुआ है। धार्मिक, सुसंस्कृत, सामाजिक और वसुदेवकुटुंब की भावनावाला व्यक्ति ऐसा असंवैधानिक,

अन्यायपूर्ण कार्य स्वप्न में भी कदापि कोई नहीं कर सकता है। यह प्रवृत्ति तो जैन धर्मावलंबियों के धर्मतीर्थ को हड़पने की है। जबकि इस पांचवीं टोंक के संबंध में गुजरात राज्य के अहमदाबाद उच्च न्यायालय में स्पेशल सिविल एप्लिकेशन नं. 6428/ सन् 2004 प्रकरण में खण्डपीठ के न्यायाधीश माननीय जयंत पटेल ने 17 फरवरी 2005 को स्थगन आदेश प्रदान किया हुआ है। जिसका पालन जिला जूनागढ़ के कलेक्टर व राज्य सरकार के प्रशासन नहीं करवा सका है।

तीर्थंकर नेमिनाथ के दीक्षा, ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक गिरनार तीर्थ से हुए हैं। जैनधर्म में 24 तीर्थंकर होते हैं। उनमें से भगवान श्रीकृष्ण जी के बड़े चचेरे भाई यदुवंशी 22 वें जैन तीर्थंकर भगवान श्री नेमिनाथ जी हुए हैं। जिनका निर्वाण गुजरात राज्य के जूनागढ़ में स्थित गिरनार पर्वत की 5 वीं टोंक से लगभग 3500 वर्ष पहले हुआ था। श्री नेमिनाथ जी के बाद उसी काल में इसी गिरनार पर्वत की दूसरी टोंक से जैन मुनि श्री अनिरुद्धकुमार, तीसरी टोंक से मुनि श्री शंभुकुमार, चौथी टोंक से मननि श्री प्रदुम्नकुमार का निर्वाण हुआ है। इसी पवित्र पहाड़ पर श्रीधरसेनाचार्य ने अपने शिष्यों पुष्पदन्त-भूतबलि को शिक्षित किया। जिन्होंने यहा पर से षटखण्डागम ग्रंथ की रचना की। पहाड़ पर से 72 करोड़ 700 मुनिराजों को भी मोक्ष प्राप्त हुआ था। सिद्धक्षेत्र शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर जी के बाद क्रम में इस महत्वपूर्ण तीर्थ का क्रम है। इस क्षेत्र से आचार्य विद्यासागर जी महाराज द्वारा 19 दिसम्बर, 1996 को प्रवचनसागर जी आदि 5 ऐलक दीक्षाएं भगवान नेमिनाथ स्वामी की निर्वाण-स्थली टोंक पर प्रदान की गई है। (सन्दर्भ:पुस्तक-'निर्वाण भूमियां' के पृष्ठ-44)

टोकों से निर्वाण

जैनधर्म में 24 तीर्थंकर होते हैं। उनमें से प्रथम तीर्थंकर जिनका नाम वृषभनाथ, आदिनाथ,ऋषभनाथ है। भगवान श्रीकष्ण के बड़े चचेरे भ्राता यदुवंशी 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ/अरिष्टनेमि हैं। जिनका निर्वाण लगभग 3500 वर्ष पहले गुजरात के जूनागढ़ में स्थित गिरनार पहाड़ की 5 वीं टोंक से हुआ था। इनके बाद उसी काल में इसी गिरनार पर्वत की दूसरी टोंक से मुनिश्री अनिरुद्धकुमार, तीसरी टोंक से मुनिश्री शंभुकुमार और चौथी टोंक से मुनिश्री प्रदुम्नकुमार का निर्वाण हुआ है। पांचवीं टोंक में नेमिनाथ की पाषाण में उत्कीर्ण प्राचीन पदमासन प्रतिमा है। इसी पांचवीं टोंक में जहां से नेमिनाथ मोक्ष गये थे, उस स्थान को सौधर्म इन्द्र ने चिह्नित किया था, वहां पर नेमिनाथ के चरण-चिह्न पाषाण में उत्कीर्ण किये हुए है।

ऊर्जयन्त तीर्थ गिरनार पर्वत की यात्राएँ:

दिगंबर जैनधर्म समाज के यात्रियों का आत्म-मुक्ति का, मन शुद्धि का हज़ारों वर्ष प्राचीन तीर्थराज जो परंपरा से सतत् आस्था, विश्वास, श्रद्धा , भक्ति और वंदना का पवित्र धर्मतीर्थ की भावना को जिन्होंने आहत किया है, वे और उन जैसी मानसिकता वाले निश्चित ही अपने अंतर्मन में सत्यता को जानते होंगे। उनके कदम से भारतमाता की धरा धार्मिक, सर्वधर्म, सदभाव और समभाव की भावना छलनी-छलनी हो जायगी। विनष्ट हो जायेगी। उनका लक्ष्य अधार्मिक था। अपनी अन्यायपूर्ण धार्मिक उन्माद की भावना को पूर्ण करना ही उनका एकमात्र मंतव्य रहा है।

-प्रस्तुत प्रमाण सभी धर्मों के अनुयायियों के लिए विचारणीय है

1 संवत 503 में महणसी बाकलीवाल के पुत्र कोहणसी ने 24 प्रतिष्ठाएँ करवायी थी। बाद में इन्हीं कोहणसी के पुत्र बीजल पुत्र गोसल ने संवत 625 में आचार्य भानचंद जी के सानिध्य में गिरनार तक संघ चलाया।

2.संवत 1245 माह सुदी को भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति के समय में हेमू के पौत्र बैरा ने गिरनार तक यात्रा संघ चलवाया।

3. संवत 1709 में नेवटा निवासी तेजसी उदयकरण सम्यग्ज्ञान शिक्त यंत्र की प्रतिष्ठा गिरनार जी में करवा कर जयपुर के पाटोदियान मंदिर में उसे विराजमान किया था।

4. रचना 'जात्रासार' में गिरनार जी एवं तारंगा क्षेत्र की यात्राओं का वर्णन है। यात्रा संवत 1829 के पूर्व की थी।

5 संवत 1858 बैशाख सूदी 10 की संघ दीवान जयपुर के रामचद्र छाबड़ा ने पंचकल्याणक प्रितष्ठा करायी। रैवतकाचल (गिरनार) की पूरे संघ के साथ यात्रा की।

अंग्रेज पुरातत्वविद जेम्स बर्गीस:

"पंचम टोंक नेमिनाथ शिखर" यहां भगवान नेमिनाथ के चरण-कमल (चरण-चिह्न) है। यह जैन सम्प्रदाय के लिये अत्यन्त पवित्र तीर्थ स्थान है। इसी शिखर से भगवान नेमिनाथ को मोक्ष प्राप्त हुआ था।

(it has a small open shrine or pavilion over the footmarks or paduka of Neminath cut in the rock, and was being ministered to by a naked ascetic, Eside it hung a heavy bell.—"The Report on the Antiqueities of Kathiawad and Kichha" 1874-75-Mr. Burgess, page no-175) [2]

इस स्थल पर चरण के ऊपर चार खम्बों पर एक छतरी बनी हुई थी साथ ही एक शिलालेख स्थित था जिसमें उल्लेख था कि बूंदी (राजपुताना) के एक जैन अनुयायी द्वारा पर्वत की सीढ़ियों का निर्माण कार्य कराया गया है। [14] (उक्त छत्री 1981 में आकाशीय बिजली से नष्ट हो गयी है।)

गिरनार की पांचवीं टोंक पर निर्मित प्राचीन Jainism छतरी सहित पूरे पर्वतराज का वर्ष 1890 में नेल्सन द्वारा और वर्ष 1900 में कर्जन द्वारा लिये गये प्रमाणिक फोटो क्र. 2/6/(51) और क्र. 4303842 ब्रिटिश लाइब्रेरी में संग्रहित हैं।

वर्ष 1869 और 1874 में प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार जेम्स बर्गेस द्वारा 5 वीं टोंक का आंखों देखा निम्न प्रमाणिक वर्णन पुरातत्व विभाग द्वारा प्रकाशित है।

"पत्थर पर उकेरे गये नेमिनाथ के चरण-चिह्न के ऊपर छोटा व खुला एक मंदिर है जिसकी देखरेख एक दिगम्बर साधू द्वारा की जा रही है ! इसमें एक भारी घण्टा भी लटका है !"

(भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ASI द्वारा प्रकाशित विवरण उच्च व उच्चत्तम न्यायालय में प्रस्तुत करने का अकाट्य प्रमाण है।

पांचवीं में टोंक पर दीक्षा:

ऐलक दीक्षा: श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र श्री गिरनार जी में पौष शुक्ला चौदस, वि. सं. 1975, 15 जनवरी 1919, बुधवार के दिन चारित्र चक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी ने ऐलक दीक्षा गिरनार पर्वत पर भगवान नेमिनाथ के श्रीचरणों में स्वयं अंगीकार की थी।

आचार्य सुनीलसागर जी के द्वारा गिरनार जी में दीक्षाएं प्रदान की गयी हैं।

श्रमणों द्वारा सभी टोंकों की वंदना:

वर्तमान युग में जितने भी दिगम्बर जैन श्रमण हुए हैं, उनमें से प्रमुख आचार्य श्री शांतिसागर जी ऐसे संत हुए हैं, जिन्होंने संत परंपरा को पुनर्जीवित करने शुभारंभ किया। उन पर भारत सरकार के डॉक विभाग द्वारा बुधवार 13 नवंबर 2024 को स्मारक डॉक टिकिट जारी किया गया है। यों तो लगभग हर जैन संत के द्वारा कभी न कभी गिरनार पहाड़ की टोंकों की वंदना की गयी है। इसी प्रकार प्रमुख इन संतगणों ने गिरनार पहाड़ की वंदनाएं की है। आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी, आचार्य वीरसागर जी, आचार्य विद्यासागर जी, आचार्य श्री मेरुभूषण जी, आचार्य विमलसागर जी, आचार्य विद्यानंद जी, आचार्य वर्धमानसागर जी, आचार्य सुनीलसागर जी, निर्यापक मुनि सुधासागर जी, आचार्य तरुणसागर जी, मुनि प्रबलसागर जी।

गिरनार सिद्धक्षेत्र पहाड़ की रक्षा में मुखर संत:

आचार्य मेरुभूषणसागर जी ने तो गिरनार पहाड़ की रक्षा के लिये पूरे देश के समाज को जागृत कर दिया था। आपने इंदौर और दिल्ली में आमरण व्रत धारण कर लिया था। बिडंबना यह हुई कि दोनों बार आपको गुजरात के तात्कालिन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने समाधान का आश्वासन दिया। गिरनार पर जैनियों के साथ अन्याय नहीं होने देंगे: नरेन्द्र मोदी। किंतु पूर्ण नहीं हुआ। दिल्ली अनशन समाप्ति के लिए तो लालकृष्ण आडवानी और अमित शाह पहुंचे।

आचार्य वीरसागर जी पर लाठी से प्रहार:

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर के शिष्य आचार्य वीरसागर जी जब गिरनार पहाड़ की टोंकों की वंदना करते हुए पांचवीं टोंक में पहुंचें, और वह वहां चरण-चिह्नों की वंदना कर रहे थे, तो अंदर मौजूद पंडे ने उन पर चार-पांच बार लाठी से प्रहार कर दिये थे।

-आचार्य विद्यानंद जी ने भी गिरनार तीर्थ समाधान के लिये अटलबिहारी बाजपेयी को पत्र प्रेषित किया।

-गिरनार तीर्थ की रक्षा के लिये आचार्य विद्यासागर जी ने भावना प्रकट की है कि—गिरनार की ज्वलंत समस्या के लिए कहा है-"बाहरी दर्शनार्थियों के सहारे गिरनारजी की रक्षा नहीं हो सकती।"

-मुनि प्रबलसागर जी गिरनार पहाड़ की वंदनाकरते समय प्राणघातक हमला:

मंगलवार 01 जनवरी 2013 शाम को ऐतिहासिक दिगम्बर जैन पुरातत्व संरक्षित गिरनार पर्वत की पांचवीं टोंक पर वंदना निमित्त गये मुनि प्रबलसागर जी पर तथाकथित महंत, (मुक्तानंद) जिसने गिरनार पर्वत पर, जहां महाभारत कालीन जैन बाविसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के चरण-चिह्न हैं जो विश्वव्यापी जैन समाज की श्रद्धा के केन्द्र हैं, जबरदस्ती कब्जा किया हुआ है, द्वारा जानलेवा हमला किया गया। उनके पेट पर चाकु से पांच बार प्रहार किया गया। स्थानीय अस्पताल में उन्हें भर्ती कराया, यहां इसी टोंक पर उत्कीर्ण चरण भगवान नेमिनाथ के ही हैं, और किसी के नहीं। पुलिस प्रशासन पक्षपात पूर्ण व्यवहार न करें। -गिरनार गौरव आचार्य श्री निर्मलसागर जी महाराज।

आचार्य तरुणसागर की गर्जना:

नासिक 17 अगस्त 2004 के प्रवचन में क्रांतिकारी राष्ट्रसंत जैन मुनिश्री तरुणसागर ने कहा कि आज जैन समाज एक बार फिर (मानसिक रूप से) आंदोलित है। चिंता का विषय जैनियों की अपार आस्था का केन्द्र 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ की निर्वाणस्थली गिरनार पर्वत है। गिरनार पर्वत की चौथी और पांचवीं टोंक पर कुछ पंडे-पुजारियों ने सरकारी अधिकारियों की मिलीभगत से अवैध निर्वाण कर लिया है। इसके मूल 'जैन स्वरूप' को बिगाड़कर, कोई अन्य मूर्ति स्थापित कर दी है। वहां अब हिन्दू रीति-रिवाजों से पूजा-अर्चना की जा रही है। जैन यात्री जा तो सकते हैं, लेकिन जैन पद्धति से पू-अर्चना के उनके अधिकारों पर रोक लग गयी है। निश्चित ही यह जैन आस्थाओं के साथ तथाकथित लोगों द्वारा षडयंत्र किया जा रहा है।।

आचार्य पुलकसागर ने कहा:

आचार्य तरुणसागर नें 22-08-2004 को पर्वचन में जो कहा, वह कविता में प्रकाशित:

कण-कण उसका है पवित्र उसको क्या कभी बदल सकते
पड़ जाये कभी मौका तो उस पर जान निछावर कर सकते।
ये तीर्थ हमारे शाश्वत हैं, अधिकार हमारा है इन पर।
कोई इन पर कब्जा कर लें तुम सोये रहो अपने घर पर।
तुम चलो कदम से कदम मिला तो गिरनारी अपनी होगी।
अब नहीं जरूरत शास्त्रों की शस्त्रों की नौबत आ सकती।
हमको लेना संकल्प आज हम जान की बाजी लगा देंगे।
गिरनार और सम्मेदशिखर किसी कीमत पर जाने न देंगे।

दिगम्बर जैन यात्रियों पर पांचवीं टोंक और गिरनार पहाड़ पर किये गये हमलें:

देश के सभी भाग से दिगम्बर जैन यात्री हर साल गिरनार पहाड़ पर स्थित टोंकों की वंदना करने पहुंचते रहे हैं। पपांचीं टोंक पर बलात् कब्जा किये हुए तथाकथित पण्डों ने यात्रियों-बच्चों बुजूगों पर जानलेवा हमलें, तलवार मारने का प्रयास, मारपीट, धक्का-मुक्की करने की हरकत की गई है। पचासों बार यात्र्यों ने लिखकर पुलिस और प्रशासन में शिकायतें दर्ज करवाई। यात्री पुलिस के चक्कर के लिये यात्रा नहीं करता है। उसका आने-जाने का टिकट होता है। यह काम स्थानीय यात्री निवास की ओर से जवाबदारी लेकर किया जायगा, तो कानूनी परिणाम पक्ष में निकलेगा। 28/10/2004 को समाज के प्रसिद्ध विद्वान फूलचंद प्रेमी, पुत्र अनेकांत जैन और परिवार के साथ 20-25 व्यक्ति पहाड़ की वंदना को गये थे। पांवीं टोंक में पंडों ने लाठियां लेकर मारना प्रारंभ कर दिया। पडें बोले तुम लोग कहीं भी रिपोर्ट करों, हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इन्होंने पुलिस चौकी प्रभारी , तलहटी , भवनाथ, जूनागढ़ में शिकायत भी थी।

नैनागिरि जैन तीर्थ का अद्भुत दीपोत्सव, २०२४

सुरेश जैन (आई.ए.एस.), अध्यक्ष, जैन तीर्थ नैनागिरि

भगवान महावीर के २५५१ वें निर्वाण दिवस १ नवम्बर, २०२४ को नैनागिरि तीर्थ के वृहत परिवार ने सहस्त्रादिक यात्रियों का स्वागत, वंदन और अभिनन्दन किया। सार्द्ध शतक अर्थात १५० वर्ष पूर्व सन् १८८६ में प्रतिष्ठित अतिशयकारी महावीर की श्याम वर्णी पूर्वमुखी प्राचीनतम मूलनायक प्रतिमा की चमक-दमक में डॉ. अजित जैन, बम्हौरी वालों ने नारियल के गोले से पालिश कर अत्यधिक वृद्धि कर दी है। इस मांगलिक प्रतिमा के समक्ष सबने भक्ति पूर्वक निर्वाण लाडू चढ़ाकर विराट निर्वाण लाडू महोत्सव का भरपूर आनन्द लिया। अपने और अपने परिवार की चतुर्मुखी समृद्धि के लिए प्रार्थना की। ऋषीन्द्रगिरि में लाडु चढ़ाकर हम सबने यह स्पष्ट रूप से जान लिया कि महावीर मन की समस्त वासनाओं को जीतकर जितेन्द्रिय बन गए। उन्हें कैवल्य प्राप्त हो गया। उनका निर्वाण हो गया। अब हम उनके ज्ञान की किरणों से अपने व्यक्तित्व को सदैव प्रकाशित करते रहेंगे।

इस परम पावन अवसर पर हमने अपार शांति प्राप्त की। दिव्य अनुभव प्राप्त किया। अपने दीप से दूसरे का दीप जलाया। ज्योति से ज्योति प्रज्जवलित की। बहुत बड़ी दीपमाला बनाई। सबने केवलज्ञान के प्रकाश से अपने व्यक्तित्व को प्रकाशित किया। हम जैसे कुछ व्यक्तियों ने नैनागिरि में चार दिन रहकर दीपोत्सव का भरपूर आनन्द लिया। नैनागिरि रिट्रीट में माइण्डफुल

महोत्सव के अध्यक्ष श्री मनीष जैन, गाड़रवारा, सुरेश जैन (आई.ए.एस.) तथा न्यायमूर्ति विमला जैन

मेडिटेशन की प्रेक्टिस कर अपने स्वास्थ्य का संवंर्द्धन किया।

सहस्त्रों वर्ष पूर्व ऋद्धि संपन्न वरदत्तादि प्रागैतिहासिक महामुनियों और २,७०० से भी अधिक वर्ष पूर्व अर्हंत पार्श्वनाथ ने नैनागिरि तीर्थ का वंदन किया है। नैनागिरि में आयोजित प्रथम समवसरण में उपदेश दिया है। आचार्य कुन्द कुन्द ने ईसा की प्रथम शताब्दि में विरचित प्राकृत निर्वाणकाण्ड की सैतीसवीं और अड़तीसवीं पंक्तियों में गुम्फित निम्नांकित शब्दों में नैनागिरि (रेशंदीगिरि) तीर्थ की वंदना की है –

पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्त मुणिवरा पंच।
रिस्सिन्देगिरि सिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं।।

इसके पूर्व इसी प्राकृत निर्वाण काण्ड की पंचम पंक्ति में आचार्य कुंदकुंद ने पांचों तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रों के साथ ही नैनागिरि से मोक्ष पधारे आचार्य वरदत्त और सायरदत्त आदि मुनिवरों को प्रणाम किया है।

भैया भगवतीदास ने ३४० वर्ष पूर्व विरचित हिन्दी निर्वाण काण्ड की निम्नांकित चार पंक्तियों में नैनागिरि को तीन लोक के तीर्थो की महत्ता प्रदान की है –

समवसरण श्रीपार्श्व-जिनन्द, रेसिन्दीगिरि नयनानन्द ।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ ।
मन-वच-काय सहित सिर नाय, वन्दन करहिं भविक गुण गाय।।

इसके पूर्व इसी निर्वाण काण्ड की सप्तम पंक्ति में भैया जी ने पांचों तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्रों के साथ ही नैनागिरि से मोक्ष पधारे आचार्य वरदत्त, इन्द्रदत्त, मुनीन्द्रदत्त, सायरदत्त और गुणदत्त मुनिवरों को प्रणाम किया है।

नैनागिरि जैन तीर्थ के अद्भुत दीपोत्सव, 2024 के अवसर पर हम सबने उपरिलिखित स्तुतियों के माध्यम से आचार्य कुंदकुंद का स्मरण कर उन्हें प्रणाम किया। भैया भगवतीदास की पंक्तियों को अपना मधुर कण्ठ देकर और पुन: पुन: गुनगुना कर आत्मिक शांति प्राप्त की।

पार्श्वनाथ चौबीसी मंदिर में मस्तकाभिषेक

निर्वाण लाडू समर्पित करने के पूर्व **पार्श्वनाथ चौबीसी मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की तदाकर खड्गासन प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक किया गया।** समानुपातिक सुदर्शन रुप लावण्य से ओतप्रोत इस विशाल भव्यतम मूर्ति के आकर्षक व्यक्तित्व ने विश्व को शांति, अयुद्ध और अनासक्ति का अभिनव जीवन दर्शन दिया। वीतरागता का संदेश प्रदान किया। राजस्थान के अनाम शिल्पियों ने अपने आचरण की पवित्रता, अपरिमित आस्था और निष्पृह समर्पण की भावना के साथ पार्श्वनाथ की इस लोकोत्तर प्रतिमा का निर्माण कर दिया। मुनिवर आदिसागर जी के निर्देश पर प्रतिष्ठाचार्य पं. मूलचन्द्र जी हीरापुर उसे नैनागिरि ले आए। पर्वत पर विराजमान किया। १७ फरवरी, १९५२ को विशाल समारोह में इसे प्रतिष्ठित करा दिया। नैनागिरि में अद्भुत वीतरागता का यह प्रथम दृष्टांत बन गया।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ईसा की दूसरी शताब्दि में आचार्य समंतभद्र स्वामी ने विदिशा में अनेक विद्वानों से सफलतापूर्वक शास्त्रार्थ किया। जैन तीर्थ ऋषीन्द्रगिरि-रेशंदीगिरी-नैनागिरि की यात्रा की। नैनागिरि में भगवान आदिनाथ और पार्श्वनाथ के प्राचीनतम मंदिरों में बैठकर वृहत स्वयंभू स्तोत्र की रचना की। भगवान पार्श्वनाथ की प्रार्थना निम्नांकित अपार शक्ति संपन्न और अत्यधिक प्रभावी तथा प्रबलतम संस्कृत शब्दों में की –

बृहत्फणामण्डलमण्डपेन, यं
स्फुरत्तडित्पिंगरुचोपसर्गिणम्।
जुगूह नागो धरणो धराधरं, विरागसन्ध्यातडिदम्बुदो यथा।।

नैनागिरि तीर्थ के न्यासी तथा बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य अशोक जी और बड़े पुजारी पं. कोमलचन्द्र जी द्वारा सौधर्म इन्द्र की पदवी से विभूषित विकास सिंघई, लंदन-नैनागिरि ने सर्वप्रथम महामस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त किया। मनोज कुमार जैन, सुरेन्द्र सिंघई, डॉ. महेन्द्र, मोहित और नयन ने इन्द्रों के पद धारण कर उन्हें सहयोग दिया। सर्वोच्च शिक्षित इन युवा इन्द्रों की हार्दिक भक्ति की सभी ने सराहना की।

जिनवाणी महोत्सव

निर्वाण महोत्सव की पूर्व रात्रि में वृहत स्तर पर जिनवाणी की वंदना की गई। हमारे परिवार के दशाधिक युवक और युवतियाँ अपने-अपने प्रोफेशनल लक्ष्य निर्धारित कर देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व के अनेक महानगरों में भौतिक प्रगति की ऊँचे शिखरों पर पहुँच गए है। उन्होंने दीपोत्सव, 2024 की पूर्व रात्रि में नैनागिरि में जिनवाणी महोत्सव में सहभागिता कर अपने प्रोफेशनल जीवन के साथ-साथ मानवीय जीवन के पथ पर आगे बढ़ने के संस्कार स्वीकार किए। इस अवसर पर आयोजित षट्खण्डागम के सूत्रों पर संवाद कार्यक्रम में अपने संदेश दिए। श्रुत मंदिर में स्थित श्रुत स्कंध के दोनों और प्रदर्शित **ताम्रपत्र षट्खण्डागम्म के ६ खण्ड** (प्रत्येक खण्ड का वजन १५ किलो) सम्मान और श्रद्धापूर्वक अपने-अपने सिर पर रखकर भूतल पर लाए। आचार्य धरसेन की वाणी से दो हजार वर्ष पूर्व जन्में षट्खण्डागम और कुंदकुंद के समयसार प्रभृति परमागम पर दीप दान किया।

सौधर्म इन्द्र विकास सिंघई, लंदन द्वारा महामस्तकाभिषेक

शताधिक बड़े-बड़े दीपकों को प्रज्जवलित कर उन्हें प्रणाम किया। सरस्वती देवी की आराधना की। णमोकार का गान किया। गणधर का गान किया। श्रुतदूत बनकर शारदा स्तुति का मंगल पाठ किया। सभी श्रोता भाव विभोर हो गए। इनके आध्यात्मिक बिन्दुओं और तत्वों का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त किया। इन आदि शास्त्रों के अमृत बिन्दुओं को अपने मस्तिष्क और मन में धारण किया। ये आदि ग्रन्थ मानव जीवन के उद्देश्यों का शाश्वत प्रभावी ढंग से विवेचन करते है। विश्व में शांति की स्थापना के अमर संदेश प्रदान करते है।

हमें विश्वास है कि दीपोत्सव के सहभागी सभी युवा श्रुतदूत बन कर सदैव जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करते रहेंगे।

भगवान महावीर के २५५१ वें निर्वाणोत्सव के अवसर पर हमने नैनागिरि तीर्थ की वंदना की। महावीर के केवलज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित की। उनकी वाणी के प्रवाहक गणधर और श्रुताचार्यो की वरण वंदना की। अपनी साधारण प्रतिभा और क्षमता में कई गुनी असाधारण वृद्धि की। शुभता का अनुसरण कर उत्कृष्टता की राह ग्रहण की। युवक-युवतियों ने अपार भक्ति कर सर्वोच्च लक्ष्य से अपने कैरियर को अभिप्रेरित किया। अपनी साधारण क्रियाओं को दिव्य क्रियाओं में रूपांतरित किया। हमारे परिवार के सभी युवक युवतियों ने नैनागिरि तीर्थ के लिए अपने तन-मन-धन से सदैव सहयोग देने के लिए आश्वस्त कर हमारी प्रसन्नता में सहस्त्र गुनी वृद्धि कर दी।

नई सुबह, नई शुरुआत, नई ऊर्जा, नई कमेटी (म.प्र.), को प्रथम आशीर्वाद देश के सर्वोच्च आचार्यश्री परमपूजनीय समयसागर जी महाराज का

खजुराहो में प्रथम मार्ग दर्शन लगभग डेढ से दो घंटे का समय भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के अध्यक्ष श्री डी.के. जैन कार्यकारी अध्यक्ष श्री संतोषजी (घडी) महामंत्री राजकुमार जी घाटे उपाध्यक्ष श्री मनोज जैन बंगेला श्री अमिताभ मान्या जी भोपाल मंत्री महेन्द्र जी बड़ागांव और प्रबंधकारिणी सदस्य श्रीराकेश जैन चेतक इन्दौर को प्राप्त हुआ। साथ में खजुराहो कमेटी के अध्यक्ष के सी जैन महामंत्री सहित पूरी कमेटी उपस्थित रही। खजुराहों कमेटी ने सभी सदस्यों का बहुमान किया। कमेटी ने आगे अपना तूफानी दौरा प्रारंभ किया प्रथम सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरी की यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। द्रोणगिरी की कमेटी के अध्यक्ष कपिल मलैया जी महामंत्री सहित पूरी कमेटी के पचास से अस्सी के लगभग समाजश्रैष्ठी उपस्थित रहे । मध्यांचल कमेटी को सर्वप्रथम प्रबंधन संस्थान प्रवंधन प्रशिक्षण संस्थान का अवलोकन किया जिसकी विस्तृत जानकारी संस्थान के प्राचार्य देवेश कुमार शास्त्री बलेह द्वारा दी गई,, नवनिर्मित आहार शाला, यात्री निवास चौबीसी पहाड़ पर बन्दना त्रिकाल चौबीसी, गुफा का दर्शन करवाया गया। पूरी टीम का मन अति प्रसन्न हुआ। द्रोणागिरी कमेटी द्वारा भव्य स्वागत किया गया। आश्रम कमेटी में प्रवर सागर महाराज के दर्शन किये, वहां पर भी पूरी कमेटी ने जलपान और जोरदार स्वागत किया गया। भागचंद जी पीली दुकान ने सहस्त्रकूट जिनालय , त्यागी निवास का निरीक्षण करवाया और मध्यांचल कमेटी से निवेदन किया कि प्रबंधन संस्थान की ग्रांट प्रारंभ करवाएं जिससे की क्षेत्र और आसपास के बच्चे लाभ उठा सके। अंत में सभी का आभार व्यक्त कर कमेटी आगे नैनागिर तीर्थक्षेत्र की ओर बढ गई। प्रारंभ में नैनागिर कमेटी ने तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के नवगठित पदाधिकारियों का शानदार सम्मान किया।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के नवगठित कमेटी के अध्यक्ष श्री डी के जैन जी व कार्यकारी अध्यक्ष श्री सन्तोष कुमार जी जैन घड़ी , महामंत्री श्री राजकुमार जी घाटे उपाध्यक्ष श्री अमिताभ जैन जी मान्या व श्री मनोज जी बंगेला , प्रचार प्रमुख राजेश जैन रागी सहित अन्य पदाधिकारीयों ने नैनागिरि की तीर्थ वंदना करने का सौभाग्य प्राप्त किया तथा क्षेत्र की विभिन्न व्यवस्थाओं,गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर क्षेत्र के संरक्षण संवर्धन व विकास को गति प्रदान करने में मध्यांचल की भूमिका पर चर्चा की। इन पदाधिकारियों ने अपनी-अपनी बात रखते हुए मार्गदर्शन दिया। वहीं नैनागिरि तीर्थ क्षेत्र के मंत्री द्वय राजेश रागी व देवेन्द्र लुहारी , उपमंत्री जिनेश बहरोल, कोषाध्यक्ष कमल डेवडिया ने क्षेत्र से संबंधित जानकारी देते हुए सहयोग की कामना की। इस मौके पर जैन इंजीनियर्स सोसायटी सागर सम्भाग के नव निर्वाचित मंत्री इंजी प्रासुक सांधेलिया सागर को मध्यांचल कमेटी एवं नैनागिरि कमेटी ने

सम्मानित कर शुभकामनाएं दी। इस मौके पर ट्रस्ट कमेटी के उप मंत्री अशोक बम्हौरी, प्रबंध समिति के संयुक्त मंत्री मोतीलाल सांधेलिया,उप मंत्री सचेन्द्र लोहिया , दिनेश बहरोल, प्रचार मंत्री सुरेश सिंघई , भागचंद्र बम्हौरी सहित अनेक पदाधिकारी सदस्य तथा क्षेत्र के मैनेजर शिखर चंद्र तथा कन्छेदी लाल, कोमल चंद्र, विकास सहित क्षेत्र स्टाफ मौजूद रहा। अंत में सभी का आभार व्यक्त करते हुऐ कमेटी सागर पहुंची वहां संतोषजी जैन घडी ने भव्यतम जिनालय जो कि निर्माणाधीन है का निरीक्षण भी करवाया। आगे

और दौरे बुंदेलखंड के होना है इस बात के साथ आगामी योजना पर चर्चा हुई। सभी का आभार राजकुमार जैन महामंत्री ने माना।

देवघर जैन मंदिर में भक्तामर स्तोत्र गुणमाला कक्ष का उद्घाटन

दिनांक ३ अक्टूबर २४ देवघर जैन मंदिर में भक्तामर स्तोत्र गुणमाला कक्ष का उद्घाटन के पुण्य अवसर पर उद्घाटन करते भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी के साथ पदम श्री विमल जैन, कल्पनाकार जैन कमल, मुंबई, आर्टिस्ट कविता दीपक जैन, श्री प्रदीप भैया, तारा बहन, नारायण दास विधायक देवघर, सुरेश झांझरी, अशोक पाण्डेया , प्रदीप जैन, विजय जैन, श्री जवाहर जैन के साथ मेरा परपोता सम्मेद जैन दीप प्रज्वलन में दादाजी लोगों का हाथ बटाते हुए। विदित हो देवघर जैन समाज के अलावा झारखंड व अनेक प्रांतो से प्रतिनिधि व मेरे रिश्तेदार इस आयोजन में शामिल हुए।

ताराचंद जैन
(अध्यक्ष झारखंड राज्य दिगंबर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड)

महाराष्ट्र अंचल कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह संपन्न

श्री णमोकार तीर्थ चांदवड की पावन भूमि पर श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी महाराष्ट्र अंचल की पंचवार्षिक कार्यकारिणी और नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का पदग्रहण समारोह परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य १०८ आचार्य गुरुवर श्री देवनंदीजी महाराज एवम् उनके संघ की पावन उपस्थिती में और भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के प्रमुख पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति में रविवार दिनांक २० अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। इस समय पूरे महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों से आये हुये सैकड़ों गुरुभक्तों की उपस्थित रही।

सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरूवात मंगलाचरण से की गयी। उसके बाद परम पूज्य गणाधिपति गणधराचार्य १०८ आचार्य श्री कुंथुसागरजी महाराज की फोटो अनावरण, पुष्प अर्पण एवम् दीप प्रज्वलन भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री. संतोषजी पेंढारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री. नीलमजी अजमेरा, श्री. संजयजी पापडीवाल, जिर्णोध्दार समिती के अध्यक्ष श्री अनिलजी जमगे, श्री बाबुभाई गांधी, नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष श्री मिहिरभाई गांधी, प्रांतिय महामंत्री श्री ओम पाटनी, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री रविंद्र देवमोरे, श्री रमणीकभाई कोठडिया, श्री सुमेरजी काले, श्री ललितजी पाटनी, श्री महेंद्रजी शहा, श्री पवनजी पाटनी, श्री संतोषजी काला, श्री महेंद्रजी काले श्री विजयजी लोहाड़े, श्री पारसजी लोहाड़े इत्यादी के शुभहस्ते संम्पन्न हुयी। तत्पश्चात सारस्वताचार्य श्री देवनंदीजी महाराज का पूजन एवम् पादप्रक्षालन श्री. बाबुभाई गांधी के परिवारजनों द्वारा संम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम श्री. बाबुभाई गांधी इनका अमृत महोत्सवी (७५ वाँ) जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया एवम् उन्हे मानपत्र अर्पण दे करके उन्हे **'आर्यन समाज शिरोमणी'** पदवी द्वारा विभूषित किया गया। इसी समय श्री नीलमजी अजमेरा, श्री संतोषजी पेंढारी, श्री अनिलजी जमगे इनका भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के नये दायित्व हेतु एवम् श्री सुनिलजी पाटनी इनका महाराष्ट्र राज्य जैन अल्पसंख्यक

महामंडल की कमिटी में चयन होने पर सत्कार किया गया।

कार्यक्रम की प्रस्तावना एवम् स्वागत णमोकार तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष एवम् तीर्थक्षेत्र कमिटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नीलमजी अजमेरा ने किया। उसके बाद महाराष्ट्र अंचल कार्यकारिणी के वरिष्ठ प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री रवीजी देवमोरे, श्री महेंद्रजी शहा, नुतन प्रांतिय अध्यक्ष श्री मिहिरभाई गांधी, श्री अनिलजी जमगे, नूतन प्रांतीय महामंत्री श्री ओमजी पाटनी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोषजी पेंढारी इन्होने मनोगत व्यक्त किये। सभी वक्ताओं ने तीर्थो के संरक्षण, संवर्धन एवम विकास तथा सदस्य वृध्दि के बारे में अपने विचार व्यक्त किये। राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोषजी पेंढारी ने भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के चालू कार्यो के बारे में एवम् विभिन्न तीर्थक्षेत्रो में चल रहे कोर्ट केस की स्थिती के बारे में सभा को अवगत कराया। परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य १०८ आचार्य श्री देवनंदीजी महाराज ने सभी तीर्थो पर जिस तरह की परम्परा चल रही है उसमें बदलाव नहीं करने की बात की एवं तीर्थो के विकास में समाज को अपना योगदान देने के बारे में एक नारा दिया "हमारे तीर्थ जैनों का दर्शन-तन मन धन सब इसको अर्पण" इसके साथ ही सभी क्षेत्रो पर कर्मचारियों का एक ड्रेस कोड एवम् सबके गले में आयडेंटी कार्ड होने चाहिए, ऐसे विचार व्यक्त करते हुये नूतन पंचवर्षीय कार्यकारिणी को अपना शुभाशिर्वाद प्रदान करते हुये यह कार्यकारिणी अपने विकास कार्यो का उच्चत्तम स्तर प्राप्त करेगी ऐसी अपेक्षा व्यक्त की। तत्पश्चात सभी चयनीत पदाधिकारियों को गुरूदेव के हस्ते अभिनंदन पत्र प्रदान किये गये। कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन प्रांतीय महामंत्री ओम पाटनी ने किया।

आगन्तुक सभी श्रावको के रहने की एवम् स्वादिष्ट अल्पोहार व भोजन की व्यवस्था क्षेत्र पर समुचित तरह से की गयी। सभी आगन्तुकों का स्वागत सभागृह में आने के पहले श्री सन्मती सेवा दल के पदाधिकारियों ने महाराष्ट्रीयन टोपी, स्वागत दुपट्टा एवम् मधुर गुड देकर के किया गया। इस कार्यक्रम का समयोचित सूत्रसंचालन सोलापुर के प्रथमेश विपिन कासार एवं ओम पाटनी ने किया।

आचार्य श्री शान्तिसागर जी महामुनिराज पर डाक विभाग द्वारा कानपुर में विशेष कवर

बीसवी सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महामुनिराज के आचार्य पदारोहण के शताब्दी वर्ष २०२३–२४ कार्यक्रमों के अन्तर्गत डाक विभाग द्वारा विशेष कवर व विरुपण का अनावरण प्रज्ञाश्रमण बालयोगी गुरुवर श्री अमितसागर जी मुनिराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से मुख्य डाकघर कानपुर के बहुउद्देशीय हॉल में किया गया।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महामुनिराज बीसवीं शताब्दी में दिगम्बर परम्परा को आगे बढ़ाने वाले प्रथमाचार्य थे। सरकार द्वारा दिगम्बर जैन साधुओं के विहार इत्यादि पर लगी रोक को उन्होंने हटवा कर पुन: दिगम्बरत्व को स्थापित किया। अपने ३५ वर्षों की निर्ग्रन्थ साधना में ९,९३८ व्रत किये। उन्होंने अपनी तपस्या साधना, ध्यान आदि में कोई भी विघ्न बाधा आने पर समता भाव से उसको सहन किया। धर्म ग्रन्थों के संरक्षण के प्रति उन्होंने विशेष प्रयास करवायें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुबोध प्रताप सिंह (निदेशक डाक सेवायें), विशिष्ट अतिथि श्री शम्भुराय (चीफ पोस्ट मास्टर), मुख्य वक्ता डॉ. चन्द्रकान्त चौगले, सांगली, महाराष्ट्र द्वारा आचार्यश्री शान्तिसागर जी महामुनिराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। सभापति श्री संजय जैन ने अतिथि का स्वागत किया एवं आचार्य श्री के जीवन चरित्र पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। उपस्थित अतिथियों द्वारा २०वीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महामुनिराज का विशेष कवर व विरुपण का विमोचन किया तत्पश्चात अध्यक्ष श्री धनराज सुराना जैन ने अपने विचार व्यक्त किये।

महामंत्री त्रिभुवन चन्द्र जैन द्वारा धन्यवाद व आभार व्यक्त किया गया। मंच का संचालन डॉ. चक्रेश जैन द्वारा किया गया।

पर्वराज पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को तीर्थसेवा संरक्षण हेतु दिगम्बर जैन समाज द्वारा प्राप्त सहायता

श्री अशोका इलेक्ट्रीकल एण्ड लाईट्स,	जयपुर	१,००,०००/-	श्री जैन समाज बागीडोरा	बांसवारा	५,१००/-
श्री दिगम्बर जैन सिद्धकूट चैत्यालय टेम्पल ट्रस्ट	अजमेर	५२,३४८/-	श्री दिगम्बर जैन समाज	दिल्ली	११,०००/-
डॉ. हर्षवर्धन दोभाडा	अकलूज	५,०००/-	श्री अभिजित जयंत चवरे	अकोला	५,००१/-
श्री विरांग शहा	बारामती	५,०००/-	श्रीमती चित्रा अशोक शाह	लोनंद	५,००/-
श्री तीर्थंकर नमोकार दोशी	पुणे	५,०११/-	श्री सोहनलाल जवेरचंदजी जैन	डुंगरपुर	१,०००/-
श्री हितेश नंदकुमार दोशी	टेम्बुर्नी	५,००१/-	श्री वोरा मीठालालजी खेमराजजी	रामगढ़	१,१००/-
श्री सुर्यकांत शहा (मोहळ)	पुणे	५,००१/-	श्री समीप जयकुमार कलमकर	ठाणे	५,०००/-
श्री विपुर शांतीलाल डूडू	भवाणिनगर	१,००१/-	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी	जयपुर	१,००,००,०००/-
श्री स्वप्निल शशिकांत मेहता	अकलूज	५००/-	श्रीमती लीना एन.काला		२५,००१/-
श्री गजेन्द्र जैन गिन्नी ग्रुप	इन्दौर	२,००,०००/-	श्री विवेक प्रेमचंद देवालासी	कारंजा लाड	५,०००/-
श्री भरत जैन	इन्दौर	१,५१,०००/-	श्रीमती विजयाताई अविनाश सिंघई	अंजनगांव सुर्जी	१०,०००/-

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को श्री सम्मेदशिखरजी के संरक्षण एवं संबर्द्धन हेतु एक करोड़ का चेक भेंट किया दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी प्रबन्धसमिति ने

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बूप्रसाद जैन का जयपुर अधिकारिक यात्रा के दौरान आज अंचल अध्यक्ष राजकुमार कोठ्यारी की अध्यक्षता में भट्टारक जी की नसियाँ में आयोजित समारोह में समाज के समक्ष जैन धर्म का शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी के संरक्षण एवं संबर्द्धन हेतु एक करोड़ रु का राशि का चैक दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी प्रबन्ध समिति की ओर से अध्यक्ष सुधान्शु कासलीवाल, संयुक्त मंत्री उमरावमल संघी, पी. के. जैन, कोषाध्यक्ष विवेक काला, कार्यकारिणी सदस्य सुरेश सबलावत, हेमन्त सौगानी ने तीर्थक्षेत्र कमेटी को भेंट किया। इस अवसर पर संस्था के 125 वर्ष के प्रवेश पर जनहितार्थ कार्यों के फोल्डर एवं लोगो का जवाहर लाल जैन द्वारा विमोचन किया गया। इसी क्रम में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर लाल कोठी की ओर से ढाई लाख और विवेक काला परिवार की ओर से पाँच लाख रु. की राशि का भी सहयोग दिया गया। इस अवसर पर अंचल के परम शिरोमणि संरक्षक सुधान्शु कासलीवाल ने सम्बोधित करते हुए कहाँ कि तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा व संरक्षण की जिम्मेदारी सामूहिक है।

इस अवसर पर अंचल के परम शिरोमणि संरक्षक विवेक काला ने कहाँ कि संस्थाएँ तभी अपनी गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित कर सकती हैं, जब समाज का तन-मन धन से सक्रिय सहयोग होता रहे।

इस अवसर पर अंचल के परम शिरोमणि संरक्षक सुरेश सबलावत ने कहाँ कि शिखरजी जैन समाज के अतीत का सौरभ, वर्तमान का गौरव और भविष्य का संबल है, प्रत्येक व्यक्ति को इसके संरक्षण का व्रत लेना चाहिए।

समारोह का प्रारम्भ णमोकार मंत्र के उच्चारण से सुदीप बगड़ा ने किया। तप्पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत 11 फीट की फूलो की माला, अभिनन्दन रुप में शाल, साफा, दुपट्टा एवं प्रशस्ति पत्र से किया गया। अंचल अध्यक्ष राजकुमार कोठ्यारी ने स्वागत भाषण दिया और कहाँ कि तीर्थो की रक्षार्थ हमे सदैव तैयार रहना चाहिए। उन्होंने आगे कहाँ कि तीर्थ हमारी परम्परा के प्रतीक हैं, आने वाली पीढ़ी के लिए उन्हें सुरक्षित रखना हमारा दायित्व है।

राष्ट्रीय मंत्री एवं तीर्थरक्षार्थ दानपत्र गुल्लक योजना के राष्ट्रीय संयोजक इन्दौर निवासी हँसमुख जैन गाँधी ने गुल्लक योजना की बात रखी और सदन में उपस्थित महानुभावों ने अपने-अपने मन्दिरों में गुल्लक योजना को रखने की पहल करी। जिससे एक- एक रुपया एकत्रित होकर क्षेत्रों के विकास में लगायें जा सकें और जन-मानस जुड़ सकें। इस दौरान जयकुमार

जैन कोटावाले ने अल्पसंख्यक विभाग के गठन की चर्चा करी। इस अवसर पर राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अशोक दोषी एवं पत्रकार शरद जैन, दिल्ली ने भी सभा को सम्बोधित करते हुए सभी तीर्थक्षेत्रों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ने की अपील की।

राजस्थान अंचल के महामंत्री मनीष बैद ने बताया कि इस अवसर पर सुभाष चन्द जैन, राजीव जैन गाजियाबाद, अतुल सौगानी, महेश काला, सुभाष पाटनी स्वप्नलोक, राजकुमार सेठी, उदयभान जैन, योगेश टोडरका, महेश बाकलीवाल, राकेश छाबड़ा, प्रदीप गोधा, विजय चौधरी, कमल बैद, अमन जैन पत्रकार, पदम चन्द भाँवसा, अनिल छाबड़ा, पूनम चन्द बैनाड़ा, जे. के. जैन नेमीसागर विशेष रुप से उपस्थित हुए।

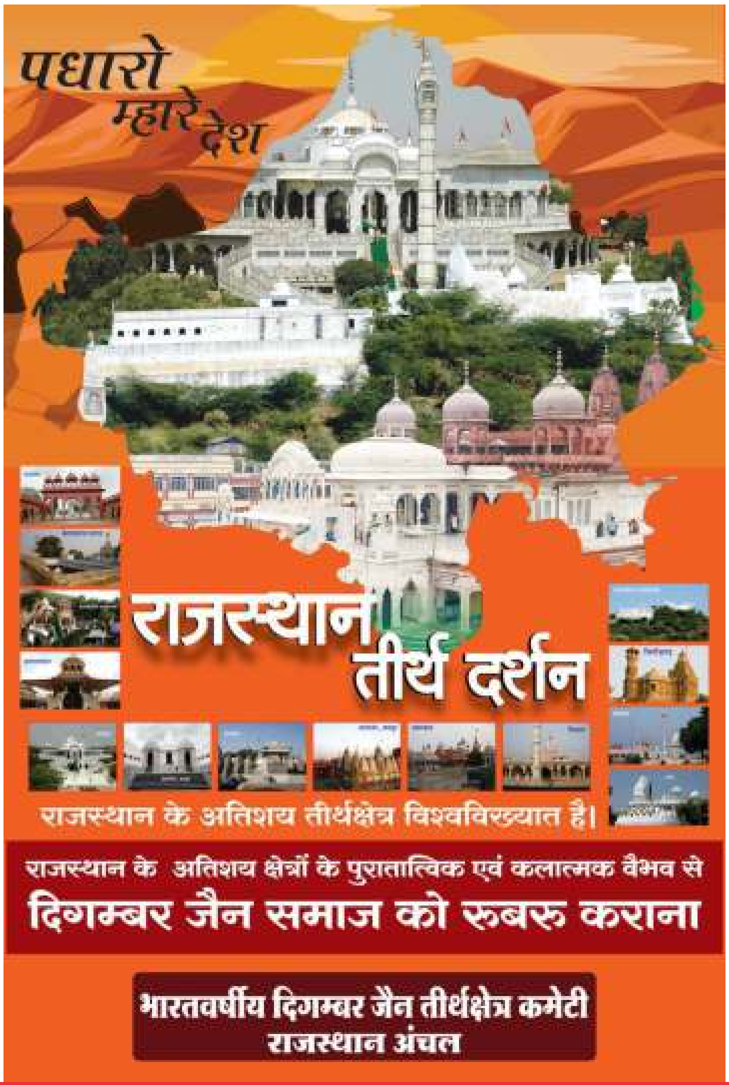

प्रो. अभय कुमार जैन विद्वत् महासंघ पुरस्कार से सम्मानित

अयोध्या। भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन–९८ के समापन अवसर पर जैन धर्म की प्राचीनता एवं जैन सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार हेतु स्थापित तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ द्वारा ई. सन २००० में चन्दारानी जैन स्मृति विद्वत् महासंघ पुरस्कार की स्थापना महासंघ के संरक्षक श्री कैलाशचन्द्र जैन सर्राफ के सौजन्य से की गई। प्रारम्भ में इस पुरस्कार की राशि रु. ११०००/– थी किन्तु २०१४ से इसे बढ़ाकर रु. २५०००/– कर दिया गया। २०२४ में संस्था का रजत जयन्ती वर्ष है। फलत: इस वर्ष के पुरस्कार का विशेष महत्त्व है।

रजत जयन्ती वर्ष में यह पुरस्कार ४ दशकों की उत्कृष्ट शैक्षणिक सेवाओं, अंहिसा, शाकाहार तथा सदाचार एवं जैन धर्म, संस्कृति के प्रचार–प्रसार में विशिष्ट योगदान हेतु उ.प्र. जैन विद्या शोध संस्थान के उपाध्यक्ष तथा रसायन विज्ञान के प्राध्यापक (से.नि.) प्रो. अभय कुमार जैन को प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत रु. २५०००/– की राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति प्रदान की जाती है।

पुरस्कार परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ की पावन उपस्थिति में अयोध्या में १६.१०.२४ को प्रदान किया गया। इसमें दि. जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, विद्वत् महासंघ के अध्यक्ष डॉ. अनुपम जैन, महामंत्री श्री विजय कुमार जैन, प्रायोजक श्री कैलाश चन्द्र सर्राफ एवं उनके परिजन उपस्थित रहे।

प्रो. अभय जी जैन का परिचय देते हुए डॉ. अनुपम जैन ने बताया कि ११ नवम्बर १९५० को मैनपुरी में जन्में श्री अभय कुमार जैन ने अपनी B.Sc., M.Sc. (Chemistry) एवं Ph.D. की उपाधियाँ कानपुर वि.वि., कानपुर से अर्जित की। आपने बालबोध, छ:ढाला एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार की धार्मिक परीक्षायें उत्तीर्ण की है तथा पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी प्रेरणा से काकन्दी तीर्थ पर जिनालय निर्माण में विशेष सहयोग प्रदान किया। वर्तमान में आप उपाध्यक्ष–उ.प्र. जैन विद्या संस्थान के पद पर रहकर जैन साहित्य एवं संस्कृति की सेवा कर रहे है।

इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए प्रो. जैन ने कहा कि कि ४४ वर्ष की शैक्षणिक यात्रा में मुझे अनेक पुरस्कार मिले है किन्तु पूज्य माताजी के सानिध्य में मिले पुररस्कार का विशेष महत्त्व है। मैं अब इससे प्रेरणा लेकर और सजगता से काम करूँगा।

कार्यक्रम में उ.प्र. जैन विद्या शोध संस्थान के निदेशक–श्री अमित कुमार अग्निहोत्री, अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्थान के निदेशक श्री राकेश सिंह, युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीवन प्रकाश जैन, प्रायोजक परिवार के सदस्यगण, श्रीमती प्रो. जैन आदि शताधिक विद्वत्जन एवं साधर्मी बन्धु उपस्थित थे।

डॉ. अनुपम जैन

तीर्थों के विकास हेतु समीपवर्ती नगरों में सुविधाओं का विकास जरूरी

श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर सुदामानगर (इन्दौर) में विशाल एवं भव्य जिनमन्दिर है। चतुर्दिक लगभग ४०० दि. जैन परिवारों की समाज है। दो मंजिला आचार्य योगीन्द्रसागर संत सदन है किन्तु संतों के प्रवचन हेतु सभागार, अहार चर्या हेतु आहार कक्ष एवं समागत अतिथियों के आवास हेतु अतिथि भवन नहीं है फलत: समाज ने यह निर्णय किया कि मन्दिर के समीप

१. सुसज्जित, सुविधाजनक अतिथिगृह
२. सभागार (प्रवचन मण्डप)
३. आहार निर्माणकक्ष एवं आहार कक्ष

का निर्माण किया जाये। एक विशाल भूखण्ड पर इसका शिलान्यास ०९.०७.२४ को दि. जैन समाज के परम संरक्षक एवं विख्यात गणितज्ञ डॉ. अनुपम जैन के परिवार द्वारा किया गया। डॉ. अनुपम जैन के सम्पूर्ण परिवार मातेश्वरी श्रीमती इन्द्रा जैन, धर्मपत्नी श्रीमती निशा जैन, पुत्र एवं पुत्र वधू श्री अम्बुज–तनु जैन, श्री अनुज–नन्दिनी जैन, श्री आयुष–मेघा जैन द्वारा शिलान्यास विधि नगर गौरव पं. श्री नितिन झांझरी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आगमोक्त विधि से समस्त विधि–विधान हुए।

तत्काल १४ परिवारों द्वारा १–१ अतिथि कक्ष तथा झांझरी (अगरबत्ती वाला) परिवार द्वारा आहार कक्ष एवं आहार निर्माण कक्ष भी घोषित किया गया। श्री पदमचंद मोदी परिवार द्वारा भूमिपूजन किया जा चुका है। कुशल इंजीनियर्स के मार्गदर्शन में निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। बहुत शीघ्र ही यह भव्य भवन तैयार हो जायेगा तब संतों के आहार–विहार, प्रवचन भी होंगे तथा इन्दौर परिक्षेत्र में तीर्थों की वन्दना हेतु आने वाले श्रद्धालुओं को भी इन्दौर नगर में आवास की सम्पूर्ण सुविधा मिल सकेगी। डॉ. अनुपम जैन ने बताया कि इन्दौर के चतुर्दिक स्थित तीर्थों पर यात्रिओं का आवागमन बढ़ाने हेतु इन्दौर में यात्री सुविधाओं का विकास जरूरी है। इससे सभी तीर्थों को लाभ होगा।

अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी द्वारा तीर्थरक्षार्थ 2024 में मन्दिरों में रखी गई गुल्लकों का विवरण

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ अतिशय तीर्थक्षेत्र दिगम्बर जैन मन्दिर जिला बरेली 243303

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
15-05-24	01/24	श्री विनोद बिहारी जैन 9837788540	श्री अखिलेश कुमार जैन 9837024885	श्री संजय कुमार जैन 9837034934	

बड़ी मूर्ति दिगम्बर जैन मन्दिर रायगंज, अयोध्या जिला फैजाबाद 224123

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
15-05-24	02/24	स्वामी रविन्द्रकीर्ति भट्टारक 9412708203	श्री अमर चन्द जैन 9450349160	श्री ऋषभ कुमार जैन 9450060017	

श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर Sc-269, शास्त्री नगर, गाजियाबाद - 201002

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	03/24	श्री नन्दन कुमार जैन 9350320541	श्री शैलेन्द्र जैन 9810637695	श्री अमित जैन 9871308536	प्राप्त

श्री 1008 ऋषभदेव दिगम्बर जैन मन्दिर समिति नंदग्राम गाजियाबाद - 201003

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	04/24	श्री राजीव कुमार जैन 9971974692	श्री अजय जैन 9350021136	श्री शरद जैन 9871755551	

श्री वीर दिगम्बर जैन मन्दिर समिति, A-373, संजय नगर, सेक्टर-23, गाजियाबाद -201001

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	05/24	श्री अनिल कुमार जैन 9899117653	श्री हरिश जैन 9350835110	श्री प्रद्युमन जैन 9310034195	प्राप्त

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर समिति, वसुन्धरा गाजियाबाद - 201012

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	06/24	श्री नवीन जैन 9910339268	श्री अजय जैन 9810016690	श्री महेशचन्द जैन 9211242391	

श्री महावीर वाटिका जैन मन्दिर सेक्टर-3, वैशाली, गाजियाबाद - 201010

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	07/24	श्री महीम जैन 9891083777	–	–	

श्री ऋषभदेव जैन मन्दिर, अहिंसा खण्ड-2 इन्दिरापुरम गाजियाबाद-201318

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	08/24	श्री नवीन जैन 9312069959	श्री सुमित जैन 9868042874	श्री विश्वजीत जैन 9871308536	

श्री 1008 मुनिसुब्रतनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर शालीमार गार्डन, एक्स.-1 गाजियाबाद 201005

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	09/24	श्री सविन्द्र जैन 9811175107	**श्री नीरज जैन 9999656513**	श्री मोहित जैन 9873552084	

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर ई ब्लॉक, कवि नगर गाजियाबाद -201002

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	10/24	श्री सुभाषचन्द जैन 9311505255	श्री प्रदीप उपहार 9210833777	श्री सतीश जैन 9350605969	**प्राप्त**

श्रमण श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन सभा इन्दिरापुरम गाजियाबाद -201014

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र विवरण
03-08-24	11/24	श्री अभिनव जैन 9560331332	श्री विवेक जैन 9891227133	श्री संजय जैन 9971122020	

श्री दिगम्बर जैन टैम्पल सोसाइटी (रजि.) रेलवे रोड़ घंटाघर, गाजियाबाद - 201001

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	12/24	श्री आर.सी.जैन 9810046734	श्री राजेन्द्र जैन 9818580900	श्री दिनेश जैन 9811106150	**प्राप्त**

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद 201001

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	13/24	श्री अरविन्द जैन 9818371788	श्री राम जैन 8851167905,	–	**प्राप्त**

श्री दिगम्बर जैन समिति ई-ब्लॉक सूर्य नगर, गाजियाबाद 201001

दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	14/24	श्री योगेश जैन 9810090477	श्री अमोलक जैन 9810821110		

श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर जैन नगर पंचवटी, गाजियाबाद 201001					
दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	15/24	श्री नरेन्द्र कुमार जैन 9311612645	श्री देवेन्द्र जैन 8130698238	श्री राकेश तार वाले 9810081462	

श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जैन मोहल्ला, शामली (उ.प्र.) 247776					
दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	18/24	श्री कमल जैन 9452292003	श्री राजीव जैन 9412711495	श्री सचिन जैन 9319044284	प्राप्त

श्री 1008 भगवान महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, तालाब रोड़, शामली 247776					
दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
03-08-24	19/24	श्री सुदेश जैन 7906760234	श्री राजेश जैन 9837289550	श्री राजेश जैन 8630134410	प्राप्त

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर निर्माण विहार दिल्ली 110092					
दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र विवरण
30-10-24	20/24	श्री धनेन्द्र जैन 9811065754	श्री सुनील जैन 9811065754	श्री नरेन्द्र जैन 9810124711	प्राप्त

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बलबीर नगर दिल्ली 110092					
दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र विवरण
06-11-24	22/24	श्री अंचल जैन 9810099373	श्री संजय जैन 8285171404	श्री मनोज जैन 9811006768	प्राप्त

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जैसवाल जैन मन्दिर शक्करपुर दिल्ली 110092					
दिनांक	गुल्लक न.	अध्यक्ष नाम व पता	मंत्री नाम व पता	कोषाध्यक्ष नाम व पता	स्वीकृति पत्र
01-11-24	23/24	श्री रूपेश जैन 8860106990	श्री ओम प्रकाश जैन 9210309926	श्री मनोज जैन 9871339338	प्राप्त

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी

Bhartvarshiya Digambar Jain Tirth Kshetra Committee

द्वितीय तल, हीराबाग, सी.पी. टैंक,
कस्तूरबा गांधी चौक, मुम्बई 400004, मो. 9833671770, 7738383535

जम्बू प्रसाद जैन, गाजियाबाद
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मे. 98101 80510

संतोष जैन पेंढारी, नागपुर
राष्ट्रीय महामंत्री
मो. 98222 25911

प्रदीप जैन (पीएनसी), आगरा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 98370 56653

सुरेश जैन (TMU), मुरादाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 98370 40040

नीलम अजमेरा, उस्मानाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 78880 51008

विजय जैन, अहमदाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 98250 07495

संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 098220 18699

अशोक दोशी, मुम्बई
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
मो. 98204 30114

जय कुमार जैन, कोटावाले, जयपुर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 94140 68250

वीरेश सेठ, जबलपुर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 94250 95618

हसमुख जैन गांधी, इन्दौर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 93021 03513

डॉ. जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 94110 25124

तीर्थरक्षार्थ दानपात्र 'गुल्लक' योजना

तीर्थ क्षेत्र कमेटी सम्पूर्ण भारत के तीर्थ क्षेत्रों के विकास, संवर्धन, संरक्षण, जिर्णोद्धार आदि कार्य पिछले 125 वर्षों से कर रही है। साथ ही अनेक वर्षों से सम्मेद शिखरजी, गिरनारजी, शिरपुरजी, केशरियाजी आदि तीर्थों के कोर्ट केश सुप्रीम कोर्ट में लड़ रही है।

उपरोक्त पुनीत कार्य सम्पूर्ण समाज की सहभागिता एवं समर्थन से ही संभव है। तीर्थ क्षेत्र कमेटी **समस्त तीर्थों एवं मन्दिरों में दान पात्र (गुल्लक)** रख रही है। आप अधिक से अधिक अपने निकट के मन्दिर में **'तीर्थ क्षेत्र कमेटी'** द्वारा रखी **गुल्लक** में दान राशि डालकर तीर्थों के संरक्षण का पुण्य प्राप्त करें।

निवेदन : मंदिरों एवं तीर्थों के पदाधिकारी गुल्लक हेतु कृपया सम्पर्क करें।

जम्बूप्रसाद जैन	सन्तोष जैन पेंढारी	हसमुख जैन गांधी, इन्दौर
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमेन, गुल्लक योजना समिति
मो. 9810180510	मो. 9822225911	मो. 93021 03513

:: सम्पर्क अंचलिय अध्यक्ष एवं मंत्री ::

पूर्वांचल -	श्री कन्हैयालाल सेठी, औरंगाबाद	94312 23893	कर्नाटक -	श्री विनोद बाकलीवाल, मैसूर	99004 20001
	श्री प्रभात कुमार सेठी, गिरिडीह	94311 67498		श्री अभिनंदन कोथेरी, बेलगॉव	9448339730
गुजरात -	श्री पारस बज, अहमदाबाद	98250 30311	मध्यांचल -	श्री डी.के. जैन, इंदौर	98270 96093
	श्री ऋषभ जैन, अहमदाबाद	98250 76721		श्री राजकुमार घाटे, इंदौर	9425317254
राजस्थान -	श्री राजकुमार कोठ्यारी, जयपुर	94140 48432	तमिलनाडु	श्री संजय टोलिया, पांडिचेरी	94436 16595
	श्री मनीष वेद, जयपुर	94140 16808	पांडिचेरी -	श्री एस. श्रेणिकराज जैन, टिंडीवाना	79041 65960
उत्तर प्रदेश -	श्री जवाहर जैन, सिकंदराबाद	94112 45100	महाराष्ट्र -	श्री मिहिर गांधी, अकलूज	96370 73395
	श्री सन्देश जैन, बिलासपुर	70170 56876		श्री ओम पाटनी, इचलकरंजी	93720 43670
दिल्ली -	श्री प्रदुमन जैन, दिल्ली	98112 21008			
	श्री सुनिल जैन, दिल्ली	98100 18107			

PAVIT®
Inspired Mindscapes
600X600MM
600X600MM
600X600MM
AVAILABLE SIZES : 600x1200mm | 600x600mm | 600x300mm | 400x400mm | 300x300mm | 200x200mm | 100x100MM
Pavit Ceramics Pvt. Ltd.
303, Camps Corner-II, Near Prahladnagar Garden, Satellite,Ahmedabad-380015, Gujarat, INDIA
Ph : +91 79 40266000, info@pavits.com, www.pavits.com
Toll Free : 1800 233 3366 (9.30am to 6.30pm)

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/ 2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi November 2024
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/ 2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.